Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

नई दिल्ली ● वर्ष 26 ● अंक 20 ● 24 फरवरी - 02 मार्च, 2025 ● प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 22-02-2025 ● पेज 16 ● ₹ 10 रुपये

लोही खरड्यो जो पितंबर,
लोही सूं केम धोवायो।
तिम हिंसा में धर्म कीयां थी,
जीव उजलो किम थायो।।

रक्त से सना हुआ कपड़ा रक्त से कैसे धुल पाएगा? हिंसा में धर्म मानकर जीव उजला कैसे होगा?

– आचार्यश्री भिक्षु

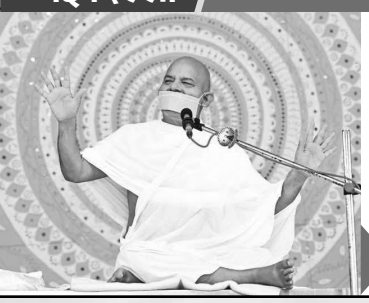

अनासक्ति से होती है कर्म मुक्ति की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

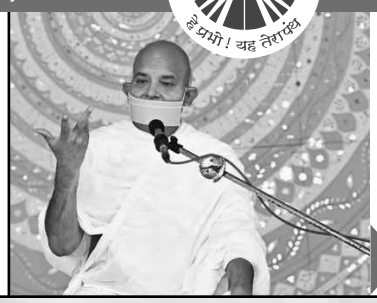

भावों की अशुद्धि या विशुद्धि के पीछे होती है कार्मण शरीर की भूमिका : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 15

Address Here

तेरापंथी महासभा और लायंस चैरीटेबल ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में हुआ आचार्य महाश्रमण इंटरनेशनल स्कूल का उदयोत्सव

मुख्यमुनिश्री महावीरकुमार जी को दीक्षा दिवस पर मिला धर्मसंघ में ज्ञान, साधना और संस्कारों के प्रसार का आशीर्वाद

हरिपर, भुज।
17 फरवरी, 2025

महान यायावर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भुज में 17 दिवसीय पावन प्रवास पूर्ण कर हरिपर में पदार्पण किया। पूज्य सन्निधि में महासभा के तत्वावधान में आचार्य महाश्रमण इंटरनेशनल स्कूल के उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर परम पावन ने अपनी प्रेरणादायी वाणी में कहा कि एक सूक्ति है—पहले ज्ञान, फिर दया-आचरण। मनुष्य के लिए ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि ज्ञानपूर्वक आचरण किया जाए, तो वह सही दिशा में होता है। ज्ञान मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है—एक आध्यात्मिक ज्ञान और दूसरा लौकिक ज्ञान। आध्यात्मिक ज्ञान आत्मा-परमात्मा का बोध कराता है, जबकि लौकिक ज्ञान व्यवहारिक जीवन और विभिन्न भाषाओं एवं विधाओं का ज्ञान प्रदान करता है।

आध्यात्मिक ज्ञान हमें ग्रंथों और ऋषि-मुनियों के माध्यम से प्राप्त हो सकता है। यदि यह ज्ञान साधना और आत्मिक अनुसंधान से प्राप्त होने लगे, तो फिर कहना ही क्या! भगवान महावीर ने आत्म-साधना के द्वारा केवलज्ञान प्राप्त किया था। आध्यात्मिक ज्ञान को कुएं के जल के समान माना जाता है—जो गहरा, स्थिर और आत्मोत्थान करने वाला होता है, जबकि लौकिक ज्ञान कुंड के जल के समान सतही होता है।

आज शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक विकास हुआ है। शैक्षणिक संस्थानों के माध्यम से पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त किया जाता है। ऐसे संस्थान ज्ञान के केंद्र होते हैं।

गत वर्ष वाशी, मुंबई में मर्यादा महोत्सव की संपन्नता के बाद तेरापंथ विश्व भारती की स्थापना हुई थी, जो जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा ट्रस्ट का गरिमामय उपक्रम है।

इस वर्ष मर्यादा महोत्सव भुज में संपन्न हुआ और इस बार भी वैसी ही पुनरावृत्ति सी हो गई।

(शेष पेज 14 पर)

संयम और त्याग में प्रवृत्त आत्मा है हमारी मित्र : आचार्यश्री महाश्रमण

भुज।
14 फरवरी, 2025

जिनशासन के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जिनवाणी की अमृतवर्षा करते हुए फरमाया कि शास्त्रों में मित्र का उल्लेख हुआ है। इस संसार में लोग मित्र बनाते हैं, और मित्रता के पीछे कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होता है, क्योंकि मित्र से अवसर आने पर सहायता की आशा की जाती है।

शास्त्रों में एक विशिष्ट बात बताई गई है—पुरुष! तुम ही तुम्हारे मित्र हो। फिर बाहर मित्र की खोज क्यों कर रहे हो? सबसे उत्तम मित्र हमारी आत्मा ही हो सकती है, और सबसे बड़ा शत्रु भी हमारी आत्मा ही बन सकती है। हमें जो सुख-दुःख प्राप्त होते हैं, उनका वास्तविक कारण भी हमारी आत्मा ही है। यदि आत्मा सद्भावों में प्रवृत्त है, तो वह हमारी मित्र है, और यदि वह दुष्प्रवृत्तियों में लिप्त है, तो वह हमारी शत्रु है। जो आत्मा अहिंसा में प्रवृत्त है, संयम और तपस्या में लगी है, वह हमारी मित्र है। वहीं, जो आत्मा पाप में प्रवृत्त है, वह हमारी शत्रु है। इसलिए हमें क्षमा भाव रखना चाहिए और धर्म-अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर होना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति साधु बन जाए और अंतिम श्वास तक अपने साधुपन को निभा ले, तो यह बहुत बड़ी उपलब्धि होती है। सभी के लिए साधु बनना कठिन हो सकता है, लेकिन श्रावक अणुव्रती तो बन ही सकते हैं। उन्हें सामायिक और संवर करना चाहिए।

गृहस्थ जीवन में आत्मा को मित्र बनाने के लिए धर्म-अध्यात्म की साधना आवश्यक है। हमें छोटे-छोटे त्याग करने का प्रयास करना चाहिए और अपनी शक्ति को त्याग एवं तपस्या में लगाना चाहिए।

(शेष पेज 14 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
24 फरवरी - 02 मार्च, 2025

अनासक्ति से होती है कर्म मुक्ति की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

भुज।
15 फरवरी, 2025

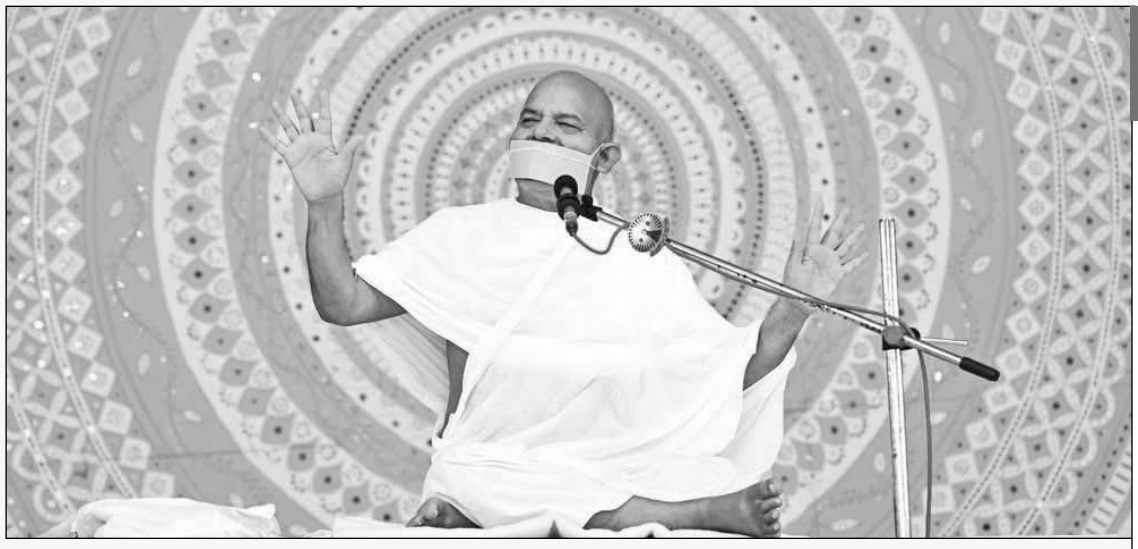

भिक्षु गण के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम वाणी का रसास्वाद कराते हुए फरमाया कि आत्मा भिन्न है, शरीर भिन्न है। जब तक जीवन रहता है, तब तक शरीर आत्मा युक्त रहता है। जब यह शरीर आत्मा से वियुक्त हो जाता है, तो फिर जीवन नहीं रहता। जीवन को चलाने के लिए व्यक्ति को प्रवृत्ति करनी होती है।

प्रवृत्ति दो प्रकार की होती है—एक रागयुक्त प्रवृत्ति, आसक्ति युक्त प्रवृत्ति; दूसरी आसक्ति मुक्त, वीतरागता की प्रवृत्ति। वीतरागता युक्त प्रवृत्ति ग्यारहवें, बारहवें और तेरहवें गुणस्थान तक रहती है। ग्यारहवें गुणस्थान को वीतराग का गुणस्थान कहा जाता है। ग्यारहवें गुणस्थान में कषाय उपशांत रहता है और बारहवें गुणस्थान में कषाय क्षय हो जाता है। ग्यारहवां गुणस्थान बंद गली के समान है। इसमें जो जाएगा, उसे वापस लौटना ही पड़ेगा। बारहवें गुणस्थान में चला गया तो लौटना नहीं पड़ेगा, बल्कि आगे बढ़ना ही होगा।

ग्यारहवें, बारहवें और तेरहवें—इन तीनों गुणस्थानों में प्रवृत्ति होती है, तो भी पाप कर्म का बंध नहीं होगा, क्योंकि वहां मोह का संयोग नहीं होता। चौदहवें गुणस्थान में तो प्रवृत्ति होती ही नहीं। केवलज्ञानी दो प्रकार के होते हैं—सयोगी केवली और अयोगी केवली। कहा गया है कि कर्मों के बंधन से बचने के लिए अनासक्त रहो। यदि बंध होगा भी तो हल्का-फुल्का होगा, जैसे सूखी मिट्टी का गोला दीवार पर नहीं चिपकता, लेकिन गीली मिट्टी का गोला चिपक सकता है। जो आसक्ति युक्त होकर भोगों में लिप्त हैं, उनके पाप कर्म चिपक जाते हैं।

गृहस्थ लोग परिवार और समाज में रहते हुए भी अनासक्त रहें, जैसे धायमाता जानती है कि मैं जिस बच्चे की सेवा कर रही हूँ, वह मेरा नहीं है। मेरी आत्मा मेरी है। मेरा कर्म मुझे ही भोगना पड़ेगा। कुण बेटो कुण बाप - करणी आपो आप, अर्थात अपनी करणी का फल स्वयं को ही भोगना होता है। निंदा-प्रशंसा की परवाह न करें, बल्कि विवेक बनाए रखें। धर्म से जुड़ी प्रवृत्ति करें। समता भाव की साधना हमारे लिए उपयुक्त है। भोजन भी शरीर को पोषण देने के लिए करने का प्रयास करना चाहिए। बहुत ज्यादा आसक्ति के साथ भोजन करने से बचने का प्रयास करना चाहिए। जो भी प्राप्त हो गया, उसमें अनासक्ति रखने का प्रयास करना चाहिए। आसक्ति बंधन का एक बड़ा कारण है। कमल की तरह जल में रहकर भी निर्लिप्त रहने का प्रयास करें, यही प्रशंसनीय है।

मंगल प्रवचन के उपरांत समणी चैतन्यप्रज्ञाजी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कीर्तिभाई संघवी, भुज सभा के अध्यक्ष वाणीभाई मेहता व आदर्श कीर्ति संघवी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

ग्यारहवां बोल
गुणस्थान चौदह

1. मिथ्यादृष्टि गुणस्थान
2. सास्वादन सम्यक्दृष्टि गुणस्थान
3. मिश्र दृष्टि गुणस्थान
4. अविरति-सम्यक् दृष्टि गुणस्थान
5. देश-विरति गुणस्थान
6. प्रमत्त-संयत गुणस्थान
7. अप्रमत्त-संयत गुणस्थान
8. निवृत्ति बादर गुणस्थान
9. अनिवृत्ति बादर गुणस्थान
10. सूक्ष्म संपराय गुणस्थान
11. उपशांत मोह गुणस्थान
12. क्षीण मोह गुणस्थान
13. सयोगी केवली गुणस्थान
14. अयोगी केवली गुणस्थान

थोड़े से सुख के लिए न छोड़ें साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

भुज।
13 फरवरी, 2025

अलौकिक प्रतिभा संपन्न युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा-पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि मनुष्य अपनी बुद्धि का उपयोग करता है। बुद्धि का विकास होना भी एक बड़ी उपलब्धि है। बुद्धि का संबंध ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से होता है। जब इसका सघन क्षयोपशम होता है, तो बुद्धि की प्रखरता भी बढ़ जाती है, जिससे व्यक्ति कुशाग्र और विवेकशील बन सकता है। बुद्धि के माध्यम से मनुष्य यह विवेचना कर सकता है कि उसके लिए क्या हितकारी है और क्या अहितकारी ?

बुद्धि सभी में समान नहीं होती। कुछ व्यक्ति गहराई से चिंतन करने वाले होते हैं, जबकि कुछ केवल सतही बातों को ही समझ पाते हैं। बाहरी और गहरी समझ में अंतर होता है। आचारांग सूत्र कहता है— हे धीर पुरुष! तुम अग्र और मूल दोनों का विवेचन करो। अर्थात, समस्या के केवल ऊपरी स्वरूप को ही नहीं, बल्कि उसके भीतरी रहस्य को भी जानना आवश्यक है। कारण और कार्य—दोनों पर विचार करना चाहिए। प्रत्येक कार्य के पीछे एक कारण होता है। यदि कारण मिटा दिया जाए, तो कार्य भी समाप्त हो सकता है।

हमें कारणों का भी सूक्ष्म विवेचन करना चाहिए कि उपादान कारण क्या है और निमित्त कारण क्या है। बुद्धि के माध्यम से कारण और कार्य को समझा जा सकता है। यदि हम कारण को जान लें, तो समस्या का समाधान किया जा सकता है। जिस कार्य में अधिक लाभ हो, वही करना चाहिए। साधु को कभी अपनी साधना और तपस्या का निदान नहीं करना चाहिए।

यदि किसी कारणवश ऐसा हो जाए, तो आत्मविश्लेषण कर उसे सुधारने का प्रयास करना चाहिए। निदान एक शल्य के समान होता है—अर्थात, थोड़े भौतिक सुख के लिए साधना को त्याग देना। साधुत्व तो सवा लाख का हीरा है, इसलिए थोड़े से सुख के लिए इसे न छोड़ें। साधना और तपस्या का परित्याग न करें।

श्रावक को भी अपनी साधना और तपस्या का निदान नहीं करना चाहिए। यह नासमझी का कार्य हो सकता है। हमें सदैव विवेक रखना चाहिए। थोड़े से भौतिक लाभ के लिए किसी बड़ी उपलब्धि को खो देना उचित नहीं है। धर्म के क्षेत्र में भी सांसारिक सुखों के लिए साधना का त्याग नहीं करना चाहिए। संयम रूपी रत्न हमें प्राप्त है, तो उसकी सुरक्षा करनी चाहिए।

समणियाँ एवं मुमुक्षु बहनें अब प्रस्थान की तैयारी में हैं। भुज में उनका गुरुकुलवास और प्रवास अत्यंत शुभ रहा। जहाँ भी रहें, उनका संयम निरंतर विकसित होता रहे। ईर्या समिति का विशेष ध्यान रखें।

मंगल प्रवचन के उपरान्त भुज के उपासक प्रभुभाई मेहता, जीतूभाई भाभेरा व बालक ध्रुवेश भाभेरा ने अपनी प्रस्तुति दी। तेरापंथ कन्या मण्डल-भुज ने अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
24 फरवरी - 02 मार्च, 2025

'जो प्राप्त है, वह पर्याप्त है' स्मृति ग्रंथ का लोकार्पण

भुज।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में कच्छ-भुज में आयोजित 161वें मर्यादा महोत्सव के प्रथम दिन, 'संघसेवी', 'शासनसेवी' एवं 'समाजभूषण' स्व. कन्हैयालालजी छाजेड़ के स्मृति ग्रंथ 'जो प्राप्त है, वह पर्याप्त है' का लोकार्पण परम पूज्य आचार्य प्रवर के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ।

मंगल आशीर्वचन प्रदान करते हुए परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने कहा— 'श्री कन्हैयालालजी छाजेड़ को मैं गुरुदेवश्री तुलसी के समय से देखता आया हूँ। उन्होंने हमारे धर्मसंघ में समर्पण भाव से सेवाएँ दीं। हमारे धर्मसंघ के महत्वपूर्ण कार्यों में वे एक दूत के रूप में चारित्रात्माओं से संपर्क करते और संवाद स्थापित करते थे। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ की अंतरंग सेवा की तथा तीन आचार्यों के समय में विभिन्न सेवाएँ प्रदान कीं। उन्होंने जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा जैसी गरिमामयी संस्था का लंबे समय तक नेतृत्व किया एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद में अध्यक्षीय भूमिका निभाई। तेरापंथ विकास परिषद में भी उन्होंने प्रमुख के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। संभवतः ऐसे श्रावक बहुत कम होंगे, जिन्हें 'शासनसेवी' और 'संघसेवी'— दोनों अलंकरण आचार्यों द्वारा प्रदान किए गए हों। वे 'समाजभूषण' सम्मान से भी विभूषित हुए। कन्हैयालालजी छाजेड़ जैन श्वेतांबर तेरापंथ समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ता और समर्पित श्रावक थे। उन्होंने तेरापंथ समाज की सेवा तथा साधु-साध्वी समुदाय की आराधना की। आचार्यों के प्रवास हेतु स्थान निरीक्षण का कार्य भी वे किया करते थे। इस प्रकार, वे तेरापंथ धर्मसंघ और समाज की सेवा में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित करने वाले विरले व्यक्तित्वों में से एक थे। 'जो प्राप्त है, वह पर्याप्त है' स्मृति ग्रंथ पाठकों को सत्प्रेरणा प्रदान करेगा। इस ग्रंथ से समाज में धार्मिक एवं आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहन मिलेगा।'

ग्रंथ की संपादिका डॉ. मुमुक्षु शांता जैन ने कहा— 'कन्हैयालालजी छाजेड़ एक साधारण व्यक्ति थे, लेकिन जब उन्होंने गुरुचरणों में पूर्ण समर्पण किया, तब उनका कद निरंतर ऊँचा उठता चला गया।

समाज की विभिन्न संस्थाओं में उन्होंने कर्तृत्व और नेतृत्व की मिसाल पेश की। यदि उनके व्यक्तित्व को एक वाक्य में समेटना हो, तो यही कहना पर्याप्त होगा—'जो प्राप्त है, वह पर्याप्त है।' इस प्रेरणा-सूत्र को उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षण में जिया। धर्मसंघ ने उन्हें 'तेरापंथ का इनसाइक्लोपीडिया' और 'तेरापंथ का चाणक्य' कहा।

तेरापंथ विकास परिषद के सदस्य एवं ग्रंथ के दिशा-निर्देशक पदमचंद पटावरी ने कहा— 'तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना से लेकर अब तक अनेक श्रावकों ने इसकी विकास यात्रा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आचार्यश्री तुलसी के शासनकाल में जन्मे कन्हैयालालजी छाजेड़ पर गुरुदेवश्री तुलसी की विशेष कृपादृष्टि थी। पूज्य आचार्यों ने अपने अनुग्रह से उन्हें जिस ऊँचाई तक पहुँचाया, वहाँ तक बहुत कम श्रावक पहुँच सके हैं।

आचार्यश्री तुलसी के महाप्रयाण के पश्चात आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने और उनके महाप्रयाण के बाद आपश्री (आचार्य महाश्रमणजी) ने उन्हें गुरुता के बंधन में सदैव बाँधकर रखा।

उनकी प्रत्येक साँस संघ को समर्पित थी। उन्होंने अनेक सभा-संस्थाओं में कार्य किया और हजारों कार्यकर्ताओं को ऊर्जा प्रदान की। इस स्मृति ग्रंथ के प्रकाशन में मुमुक्षु डॉ. शांता जैन के निष्ठापूर्ण संपादन कौशल, वीणा जैन के विशेष सहयोग एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के केंद्रीय कार्यालय 'युवालोक' के व्यवस्थागत योगदान का विशेष योगदान रहा है।

कन्हैयालालजी छाजेड़ की पौत्री एडवोकेट मनीषा राखेचा ने अपने भाव व्यक्त किए। छाजेड़ परिवार एवं परिजनों की ओर से गीतिका का संगान किया गया। उनके पुत्र लक्ष्मीपत, अशोक छाजेड़, अन्य परिजनों एवं पदमचंद पटावरी, मुमुक्षु डॉ. शांता जैन, वीणा जैन आदि ने मिलकर लोकार्पण हेतु ग्रंथ की प्रथम प्रति परम पूज्य गुरुदेव को निवेदित की।

शिशु संस्कार बोध के परीक्षा परिणाम घोषित

भिवानी। गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर शिशु संस्कार बोध भाग एक और दो की वार्षिक परीक्षा के परिणाम तेरापंथ भवन, लोहड़ बाजार, भिवानी में घोषित किए गए। परीक्षा व्यवस्थापिका उपासिका मधु जैन ने परीक्षा परिणाम घोषित करते हुए बच्चों की ज्ञानशाला के प्रति लगन और प्रशिक्षिकाओं की मेहनत के लिए बधाई दी। सभा अध्यक्ष सन्मति कुमार जैन ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया और पुरस्कार वितरण किया। उन्होंने बच्चों के उत्कृष्ट परिणामों की सराहना की। ज्ञानशाला संयोजक विजय जैन ने भी बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए। हरियाणा सह संयोजिका विनीता जैन ने अपने वक्तव्य में अभिभावकों से अनुरोध किया कि वे बच्चों को नियमित रूप से ज्ञानशाला भेजें और इसके सुचारू संचालन में सहयोग दें। बच्चों ने पूरे वर्ष में सीखी गई विभिन्न बातों की छोटी-छोटी प्रस्तुतियां दीं। बच्चियों ने ज्ञानशाला गीत प्रस्तुत किया। महिला मंडल अध्यक्षा सीमा जैन और मंत्री संस्कृति जैन ने भी बच्चों की प्रस्तुति और परीक्षा परिणाम की सराहना की।

टॉक शो एवं स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

नागपुर।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF) नागपुर द्वारा आनंद नगर वॉलीबॉल ग्राउंड में टॉक शो एवं स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में TPF नागपुर के मेडिकल संयोजक एवं आयुर्वेद विशेषज्ञ डॉ. गौतम जोगड़ ने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करते हुए घुटनों के दर्द पर विशेष मार्गदर्शन दिया।

उन्होंने घुटनों के दर्द के कारणों और उसकी रोकथाम के विभिन्न उपायों पर विस्तार से चर्चा की। घरेलू उपायों में उन्होंने बताया कि ऐसा आहार लेना चाहिए जिससे शरीर में अपच की समस्या न हो। यदि शरीर में कैल्शियम की उचित मात्रा नहीं है, तो अजवाइन, हींग, जीरा, धनिया पाउडर और दालचीनी जैसे मसालों का सेवन करना चाहिए।

उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि आहार में मल्टीग्रेन का उपयोग किया जाए, तेल की मात्रा कम की जाए और घी की मात्रा बढ़ाई जाए। इसके अलावा, उन्होंने बताया कि पंचकर्म चिकित्सा के माध्यम से घुटनों और हड्डियों से संबंधित बीमारियों का उपचार किया जा सकता है।

इस अवसर पर भाजपा नागपुर शहर की महासचिव अश्विनी जिचकर ने कहा कि घुटना प्रत्यारोपण एक वरदान है, लेकिन यदि उचित आहार, जीवनशैली में परिवर्तन और व्यायाम के माध्यम से समस्या का समाधान किया जा सकता है, तो ऑपरेशन से बचा जा सकता है। इसके लिए उन्होंने आयुर्वेदिक जीवनशैली अपनाने पर विशेष जोर दिया।

कार्यक्रम में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम नागपुर के अध्यक्ष राहुल कोठारी, पदाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्तियों ने सहित 80 से अधिक लोगों ने भाग लिया और 60 से अधिक लोगों ने स्वास्थ्य जांच शिविर का लाभ उठाया।

अंत में TPF सचिव विवेक पारख ने सभी प्रतिभागियों एवं अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

चुरू जिले के पहले नेत्र बैंक का उद्घाटन

सरदारशहर। तेरापंथ युवक परिषद, सरदारशहर एवं प्राणनाथ हॉस्पिटल, गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर के संयुक्त तत्वावधान में चुरू जिले के पहले नेत्र बैंक का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी संगीतश्री जी ठाणा-5 एवं उदासर के महंत दयानाथ महाराज का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. विकास सोनी उपस्थित रहे। राजस्थान आई बैंक सोसाइटी के स्थानीय प्रतिनिधि गणेश दास स्वामी, आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य रविंद्र चौधरी, गांधी विद्या मंदिर के अध्यक्ष हिमांशु दूगड़ एवं प्राणनाथ हॉस्पिटल के संचालक शांतिलाल चोरडिया, जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के प्रतिनिधि दीपक पींचा, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के मंत्री राजीव दूगड़, महिला मंडल की अध्यक्षा सुषमा पींचा, परिषद के शाखा प्रभारी मनीष बाफना, परामर्शक आदि गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

परिषद् अध्यक्ष लोकेश सेठिया, मंत्री अर्हम सुराणा, एवं पदाधिकारियों के साथ कार्यकारिणी सदस्य भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन गांधी विद्या मंदिर के समकुलाधिपति प्रोफेसर देवेंद्र मोहन ने किया एवं मंच संचालन धीरज छाजेड़ ने किया।

आत्मा के अलावा सभी पदार्थ हैं नश्वर

गंगाशहर।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि सुमति कुमार जी ने तेरापंथ भवन में संथारा साधिका मगनी देवी बोथरा की गुणानुवाद सभा को संबोधित करते हुए कहा कि आत्मा के अलावा सभी पदार्थ—धन, दौलत, संसार की सभी वस्तुएं और शरीर—नाशवान हैं।

शरीर का महत्व केवल आत्मा के रहने तक ही है। आत्मा के निकलते ही शरीर मिट्टी बन जाता है। हमें धर्म की साधना करनी चाहिए और धर्ममय जीवन व्यतीत करना चाहिए, क्योंकि धर्म ही आत्मा के साथ जाता है।

उन्होंने कहा कि हम सभी को एक दिन परलोक में जाना है, जहां कोई संगी-साथी या रिश्तेदार नहीं होंगे, केवल धर्म ही साथ जाएगा। इसलिए हमें सदैव जागरूक रहकर प्रतिदिन धर्म आराधना करनी चाहिए। मुनि श्रेयांस कुमार जी ने गीतिका का संगान किया। गुणानुवाद सभा में राजेंद्र बोथरा और संतोष बोथरा सहित बोथरा परिवार ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

तेयुप मंत्री भरत गोलछा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष भंवरलाल सेठिया, तेरापंथी सभा से कमल भंसाली, महिला मंडल की अध्यक्ष संजु लालाणी, पीयूष लूणिया और फतेह चंद सामसुखा ने संथारा साधिका मगनी देवी बोथरा को भावांजलि अर्पित की और दिवंगत आत्मा की आध्यात्मिक उन्नति की कामना की।

सभा के उपाध्यक्ष पवन छाजेड़ ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के संदेश का वाचन किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा के कार्यकारिणी सदस्य पीयूष लूणिया ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
24 फरवरी - 02 मार्च, 2025

श्रीउत्सव का आयोजन

पाली।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल पाली द्वारा श्रीउत्सव का भव्य आयोजन किया गया।

तेरापंथ भवन में आयोजित इस उत्सव का उद्घाटन जिला कलेक्टर एल.एन. मंत्री द्वारा किया गया। कार्यक्रम में यूआईटी सेक्रेटरी डॉ. पूजा सक्सेना और अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की कार्यकारिणी सदस्य विनीता बैंगानी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

उद्घाटन समारोह में श्री संघ सभा अध्यक्ष रमेश मरलेचा, महासभा सदस्य गौतम छाजेड़, सभा अध्यक्ष भुरचंद तातेड़, तेयुप अध्यक्ष विपिन बांठिया सहित अनेकों लोग उपस्थित रहे। महिला मंडल अध्यक्ष सुषमा डागा और मंत्री सीमा मरलेचा ने अपनी पूरी कार्यकारिणी टीम के साथ आए हुए सभी अतिथियों का आत्मीय स्वागत किया। कन्या मंडल संयोजिका तृप्ति तातेड़ और प्राची छाजेड़ ने जिला कलेक्टर एल.एन. मंत्री और डॉ. पूजा सक्सेना का तिलक लगाकर अभिनंदन किया।

जिला कलेक्टर एल.एन. मंत्री ने कहा कि हर महिला को आत्मनिर्भर बनना चाहिए, क्योंकि आत्मनिर्भरता से न केवल वह स्वयं सशक्त होगी, बल्कि समाज के सशक्तिकरण में भी योगदान दे सकेगी। जिला कलेक्टर और यूआईटी सेक्रेटरी ने सभी स्टॉलों का निरीक्षण किया और महिला मंडल के इस सराहनीय प्रयास की प्रशंसा की।

श्रीउत्सव में पाली के साथ-साथ जयपुर, अजमेर, बीकानेर, जोधपुर और दिल्ली सहित विभिन्न स्थानों से लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस आयोजन में लगभग 80 स्टॉल लगाए गए।

श्रीउत्सव के आयोजन में की मुख्य संयोजिका बबीता सालेचा और दीपिका वेदमूथा के साथ महिला शक्ति का सक्रिय योगदान रहा।

संक्षिप्त खबर

पारिवारिक शिविर का आयोजन

हासन। साध्वी उदितयशाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में पारिवारिक शिविर का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने ₹अध्यात्म के रंग, परिवार के संग₹ विषय पर धर्म परिषद को बड़े ही मार्मिक ढंग से समझाते हुए पारिवारिक संबंधों को सुदृढ़ बनाने के महत्वपूर्ण गुर सिखाए। साध्वी संगीतप्रभाजी ने अनुप्रेक्षा के प्रयोग करवाए। 'I just want your attention' और 'Remove ABCD from your life and infuse ABCD to make your life happy' इन दोनों विषयों पर साध्वी भव्ययशाजी ने सरल शब्दों में अपने विचार प्रस्तुत किए। Tounge twister और Brain storming activity के माध्यम से परिषद के सदस्यों को स्वयं का परीक्षण करने का अवसर मिला। अंतिम चरण में '18 पापों की अनुप्रेक्षा – Cleansing Therapy' पर साध्वी संगीतप्रभाजी ने अपने विचार प्रस्तुत किए, जिससे हासनवासियों को आत्ममंथन करने की प्रेरणा मिली। कार्यक्रम में सर्व समाज ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

सुजानगढ़। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित त्रैमासिक प्रशिक्षण कार्यशाला 'उड़ान एक कदम स्वावलंबन की ओर' का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी एवं साध्वी मंजूयशा जी के सान्निध्य में किया गया। नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। कार्यशाला के अंतर्गत चॉकलेट बनाने का प्रशिक्षण महिला मंडल की बहन अंजू सेठिया द्वारा दिया गया।

कैंसर जागरूकता अभियान

मदुरै। अभातेममं के निर्देशानुसार कैंसर जागरूकता अभियान के अंतर्गत मदुरै तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा सिटी एरिया में छोटे-छोटे फूड स्टाल्स, रेस्टोरेंट आदि में जाकर उन्हें न्यूजपेपर, फाइलपेपर आदि इस्तेमाल न करने वह उससे होने वाली हानिकारक बिंदुओ के बारे में समझाया गया।

नया करने के लिए आवश्यक है नई सोच

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'Think Different, Do Different & Be Different' का आयोजन

विजयनगर।

मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में बेंगलोर स्तरीय व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'Think Different, Do Different & Be Different' का आयोजन अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में अभातेयुप उपाध्यक्ष 'प्रथम' पवन मांडोत की अध्यक्षता में तेयुप विजयनगर द्वारा अर्हम भवन में किया गया।

कार्यशाला में युवाओं को संबोधित करते हुए मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि नई सोच, नया चिंतन और नई अवधारणा को वर्तमान जीवन शैली के साथ तालमेल बिठाना आवश्यक है। नई पीढ़ी को अपनी चिंतनधारा को विकसित करना होगा।

पश्चिमी संस्कृति से हटकर नवीनता की मानसिकता विकसित करने के लिए बुद्धि और विवेक को जागृत करना होगा, जिससे व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक स्थितियों में नूतनता का जन्म हो सके।

मुनि जयेश कुमार जी ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि इस तेजी से बदलते युग में व्यक्ति नई सोच के बिना आगे नहीं बढ़ सकता। मनुष्य का जन्म कुछ नया करने के लिए हुआ है, लेकिन नया करने के लिए पहले अलग तरीके से सोचना जरूरी है। व्यक्ति अपनी अलग सोच से साधारण कार्य को भी असाधारण उत्कृष्टता प्रदान कर सकता है। उन्होंने आगे कहा कि कई लोग छोटी-छोटी खुशियों को अधिक महत्व देते हैं, परंतु सच्चाई यह है कि कुछ बड़ा किए बिना व्यक्ति जीवन में महानता को प्राप्त नहीं कर सकता। सफलता के लिए छोटी-छोटी खुशियों का त्याग करना पड़ता है। हर महान व्यक्ति ने इनका बलिदान देकर ही असाधारण सफलताएं प्राप्त की हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री द्वारा नवकार मंत्र के मंगल मंत्रोच्चार से हुई। विजय गीत का संगान विजय स्वर संगम टीम ने किया।

श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने किया। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने सभी का स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के लिए शुभकामनाएं प्रेषित कीं। सभा अध्यक्ष मंगल कोचर ने अपने विचार व्यक्त किए।

मुनि जयेश कुमार जी और किशोर मंडल, विजयनगर के संयोजक हर्ष मांडोत के मध्य हुआ रोचक पॉडकास्ट कार्यक्रम विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। मुख्य अतिथि दिनेश पोखरणा ने चिंता और स्वस्थ चिंतन के अंतर को समझाने की प्रेरणा दी। मुख्य प्रशिक्षक पदम संचेती ने बड़े लक्ष्यों को हमेशा सामने रखने और अवचेतन मन को सकारात्मक व अनुशासित बनाने के लिए अच्छी आदतों पर कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। कुछ प्रयोगों के माध्यम से प्रतिभागियों को रूढ़िवादी मानसिकता के प्रभाव भी समझाए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पवन मांडोत ने रोचक तरीके से वर्तमान व्यापारिक परिदृश्य को रेखांकित किया। उन्होंने वर्तमान चुनौतियों के संदर्भ में सोशल मीडिया के उपयोग और विशिष्ट तरीकों के उदाहरण देकर श्रोताओं का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री संजय भटेवरा एवं राकेश पोखरणा ने किया, तथा आभार ज्ञापन सहमंत्री पवन बैद ने किया।

प्रेक्षा प्रवाह : शांति एवं शक्ति की ओर का आयोजन

आर.आर. नगर।

अभातेममं एवं प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशन में, प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के उपलक्ष्य में, तेरापंथ महिला मंडल आर.आर. नगर द्वारा 'प्रेक्षा प्रवाह – शांति एवं शक्ति की ओर' कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय भवन में किया गया।

कार्यक्रम का विषय था 'कायोत्सर्गः द बेस्ट वे टू रिलीव स्ट्रेस'। अध्यक्ष सुमन पटावरी ने नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यशाला का शुभारंभ किया एवं सभी का स्वागत किया।

मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण के रूप में प्रेक्षा गीत का संगान किया गया। प्रेक्षा प्रशिक्षिका पूनम दूगड़ ने कायोत्सर्ग के वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक पक्ष की विस्तृत जानकारी दी।

संपूर्ण कायोत्सर्ग का अभ्यास कराया गया तथा प्रेक्षा एप की जानकारी भी प्रदान की गई, जिसमें अनीता बैद ने सहयोग किया।

अंत में सभी ने अपने-अपने अनुभव साझा किए एवं जिज्ञासाओं का समाधान किया गया।

कार्यक्रम का सुंदर संचालन सह मंत्री वंदना भंसाली ने किया एवं आभार मंत्री पदमा महेर ने व्यक्त किया। अमिता छाजेड़ एवं सपना छाजेड़ का भी विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

छात्रों के समग्र विकास के लिए विशेष पहल

बरपेटा रोड, असम।

मदुलीझार दक्षिण माचुआ गांव एलपी स्कूल में जीवन विज्ञान पर एक विशेष सत्र आयोजित किया गया, जिसमें प्रशिक्षिका ममता बंठिया ने 70 छात्रों और 7 शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया। इस सत्र में अणुव्रत समिति अध्यक्ष अनिल बेंगानी और जेसीआई के सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

सत्र में प्रशिक्षिका ममता बंठिया ने जीवन विज्ञान की प्रासंगिकता पर चर्चा की और इसके लाभ के बारे में विस्तार से समझाया।

उन्होंने छात्रों को शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन, बौद्धिक विकास और भावनात्मक शुद्धि प्राप्त करने के सरल प्रयोगों से अवगत कराया। कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाचार्य, उप-प्रधानाचार्य और मुख्य शिक्षक भी शामिल हुए।

प्रधानाचार्य ने जीवन विज्ञान को छात्रों के समग्र विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए प्रशिक्षिका से अनुरोध किया कि यदि संभव हो, तो प्रतिदिन इस तरह के सत्र आयोजित किए जाएं।

संपूर्ण स्वास्थ्य प्रोफाइल जांच शिविर का आयोजन

राजराजेश्वरीनगर।

भारत गणराज्य के 76वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में तेरापंथ युवक परिषद राजराजेश्वरीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, डेंटल एवं आई केयर आर. आर. नगर एवं केन्गेरी में कमलेश भरत डूंगरवाल परिवार (मार्गदर्शन फाउंडेशन) के सहयोग से संपूर्ण स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर 'संजीवनी' जिसमें सीबीसी, एफबीएस, हचबीए 1सी, लिपिड प्रोफाइल, किडनी फंक्शन टेस्ट, कैल्शियम, फॉस्फोरस, लिवर फंक्शन टेस्ट, थायराइड फंक्शन टेस्ट, विटामिन डी, विटामिन बी 12, कैंसर स्क्रीनिंग प्रोफाइल आदि 44 वाइटल पैरामीटर की जांच का आयोजन 76% छूट पर किया गया। सामूहिक नवकार महामंत्र का सामूहिक उच्चारण कर शिविर की शुरुआत की गई।

अध्यक्ष बिकाश छाजेड़ ने सभी का स्वागत किया। इस शिविर में स्वास्थ्य जांच करवा कर लगभग 263 लोग (आर आर नगर में 207 एवं केंगेरी में 56) लाभान्वित हुए। शिविर को सफल बनाने में तेयुप मंत्री सुपार्श पटावरी, तेयुप पदाधिकारीगण, परामर्शक गण, कार्यसमिति सदस्य एवं एटीडीसी टीम का संपूर्ण सहयोग रहा।

कैंसर अवेयरनेस कैंप एवं सेमिनार

अहमदाबाद।

अभातेममं के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल, अहमदाबाद द्वारा राजस्थान हॉस्पिटल, शाहीबाग एवं उत्तर क्षेत्र के डी. केबिन में सेमिनार एवं निःशुल्क चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन किया गया। कैंप एवं सेमिनार का शुभारंभ डॉ. मुनि मदन कुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से हुआ। अध्यक्ष हेमलता परमार ने सभी का स्वागत करते हुए वर्षभर आयोजित कैंसर अवेयरनेस कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सिविल अस्पताल में मेमोग्राफी एवं पैप टेस्ट प्रतिदिन किए जा रहे हैं। मुनि मदन कुमार जी ने प्रेक्षाध्यान, व्यायाम, श्रम एवं संतुलित आहार के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. राजदीप गुप्ता ने बताया कि महिलाओं में मुख्य रूप से दो प्रकार के कैंसर – सर्वाइकल कैंसर और यूट्रस कैंसर अधिक पाए जाते हैं। यदि समय-समय पर स्वास्थ्य पर ध्यान दिया जाए और नियमित रूप से चेकअप करवाया जाए, तो प्रारंभिक अवस्था में ही इस बीमारी से बचाव संभव है। कैंसर का एक प्रमुख कारण मोटापा भी है, जिससे बचने के लिए नियमित व्यायाम और संतुलित आहार को अपनाना आवश्यक है। डॉ. चंद्रिका बेन ठक्कर का इस आयोजन में विशेष सहयोग रहा। उन्होंने बताया कि तनाव भी कैंसर का एक मुख्य कारण है, जिस पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। राजस्थान हॉस्पिटल की राजश्री खीमेसरा ने अभातेममं एवं तेरापंथ महिला मंडल अहमदाबाद की सराहना करते हुए कहा कि यह मंडल अत्यंत सक्रिय है और कैंसर को जड़ से समाप्त करने के लिए किए जा रहे प्रयास अत्यंत सराहनीय हैं।

मंडल अध्यक्ष हेमलता परमार एवं पदाधिकारी टीम द्वारा डॉक्टर्स का सम्मान किया गया। कैंसर जागरूकता अभियान के अंतर्गत आयोजित इस कैंप में अभातेममं कार्यसमिति सदस्य वर्षा लूनिया, संरक्षिका, परामर्शक गण, पदाधिकारी बहनें, कार्यसमिति सदस्य, समिति सदस्य एवं भाईयों ने सक्रिय सहभागिता निभाई। कार्यक्रम का कुशल संचालन सहमंत्री सरिता लोढ़ा एवं प्रचार-प्रसार मंत्री श्वेता लूनिया ने किया। शाहीबाग में मंत्री बबीता भंसाली एवं उत्तर क्षेत्र में सहमंत्री सरिता लोढ़ा ने आभार व्यक्त किया।

एटीडीसी की वर्षगांठ पर विशेष छूट

रायपुर। तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, रायपुर में स्थापना की 9वीं वर्षगांठ के अवसर पर दो दिवसीय रियायती जांच में चार टेस्ट निर्धारित लैब मूल्य से छूट पर प्रदान किए गए। इसका लाभ कुल 94 व्यक्तियों द्वारा लिया गया। इसके साथ 76वें गणतंत्र दिवस उपलक्ष्य के अवसर पर दो दिवस तक CBC टेस्ट निर्धारित लैब मूल्य से छूट प्रदान करते हुए प्रस्तुत किया गया जिसका लाभ 15 व्यक्तियों ने लिया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **कटक।** गंगाशहर निवासी कटक प्रवासी सुरेन्द्र कुमार, मनीष, रुपेश, आशीष सुराणा के नूतन प्रतिष्ठान सुराणा इन्फ़ोसिस के शुभारम्भ का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से करवाया गया। संस्कारक राजेन्द्र लूनिया एवं मनीष सेठिया ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया।

कैंसर जागरूकता शिविर तथा मैडिकल कैंप का आयोजन

कांटाबांजी।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर स्थानीय तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल कांटाबांजी और कांटाबांजी प्रगति शाखा के संयुक्त प्रयास से स्पेशलिस्ट मेडिकल फ्रटर्निटी द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर संपादित हुआ।

कार्यक्रम का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र तथा अतिथियों के स्वागत से हुआ। अग्रवाल सभा अध्यक्ष कैलाश अग्रवाल, तेरापंथ सभा उपाध्यक्ष संजय जैन, तेयुप अध्यक्ष विकास जैन, मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष बिमल जैन, अंतराष्ट्रीय अग्रवाल सम्मेलन की अध्यक्षा दीपा जैन की विशेष उपस्थिति रही। इस कैंप में 200 से अधिक लोग लाभान्वित हुए। चिकित्सकों ने परीक्षण के बाद कैंसर जागरूकता पर आयोजित सेमिनार में विस्तार से कैंसर निवारक उपायों पर चर्चा की। स्त्री विशेषज्ञ शक्ति कुमार त्रिपाठी ने कैंसर वेक्सिनेशन पर जोर दिया। उन्होंने कई प्रचलित शंकाओं का समाधान दिया। एमडी और डायबिटीज विशेषज्ञ निशांत देवता ने आहार की शुद्धता पर प्रकाश डाला।

डॉ. अनुप टिग्गा और डॉ. विपिन शुक्ला द्वारा ऑर्थोपेडिक और फिजियोथैरेपी चिकित्सा की गई। कार्यक्रम में अलग-अलग सत्रों का संचालन ममता जैन, रितु जैन, आशा जैन, आरती मित्तल द्वारा किया गया।

पंचम मासिक ध्यान शिविर का आयोजन

सिरियारी।

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी एवं प्रेक्षा फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में पंचम मासिक प्रेक्षा ध्यान शिविर का आयोजन हुआ। इस अवसर पर मुनि धर्मेशकुमार जी ने शिविरार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा- आन्तरिक सम्पदा को पुष्ट करने का साधन है- प्रेक्षाध्यान।

अध्यात्म और संयम का मार्ग गन्तव्य की ओर बढ़ाता है। जैसे सूर्य की किरणों को एक स्थान पर केन्द्रित कर अग्नि पैदा की जा सकती है।

वैसे ही ध्यान साधना के प्रयोगों से लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है, बशर्ते मार्गदर्शन और अभ्यास की निरन्तरता हो। मुनि चैतन्यकुमार जी 'अमन' ने अपने वक्तव्य में कहा- सकारात्मक सोच एवं अनासक्त चेतना का जागरण ध्यान के प्रयोगों से ही संभव है। जब व्यक्ति जीवन में तामसिक वृत्तियों पर नियंत्रण करता है तभी ध्यान की फलश्रुति संभव है। ध्यान साधना करने की कोई उम्र विशेष नहीं होती जब भी व्यक्ति के मन में जिज्ञासा भाव जागृत होता है तभी उसे ध्यान साधना में लग जाना चाहिए। कार्यक्रम में सुनीला नाहर, उषा जैन, हनुमान बरड़िया ने साधक-साधिकाओं को उद्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन गौरव जैन ने एवं संस्थान की ओर से आभार महावीर सिंह ने ज्ञापित किया।

मेगा मेडिकल कैंप का सफल आयोजन

उधना।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा आयोजित मेगा मेडिकल कैंप का शुभारंभ फेमिना टीम द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। उद्घाटन समारोह में टीपीएफ नेशनल टीम से अखिल मारू, राहुल राठौड़, अमित चोपड़ा, श्रीपाल एवं सुनील चंडालिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। साथ ही, उधना सभा के अध्यक्ष निर्मल चपलोत एवं उनकी टीम, तेरापंथ युवक परिषद उधना के उपाध्यक्ष अनिल सिंघवी एवं उनकी टीम, महिला मंडल उधना की उपाध्यक्ष महिमा चोरड़िया सहित उनकी टीम तथा तेरापंथ किशोर मंडल के संयोजक जेनिश कोठारी एवं उनकी टीम की उल्लेखनीय भागीदारी रही।

टीपीएफ नेशनल टीम द्वारा टीपीएफ उधना टीम को 'मेडल ऑफ एक्सीलेंस' से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त, मेडिकल कैंप में सहयोग करने वाले सभी डॉक्टरों एवं प्रायोजकों को भी टीपीएफ उधना द्वारा सम्मानित किया गया। इस कैंप में कुल लाभार्थी 283 रहे, जिसमें तेरापंथ भवन - उधना से 161, ATDC - भेस्तान से 30 और ATDC - पांडेसरा से 19 लाभार्थी शामिल थे। इस मेडिकल कैंप में लेब पार्टनर आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर की तीनों शाखाओं (उधना, भेस्तान, पांडेसरा) पर फुल बॉडी चेकअप पैकेज का आयोजन किया गया, जिसमें 70 से भी अधिक टेस्ट्स रियायती दरों में उपलब्ध कराए गए। संयोजक डॉ. मुकेश छाजेड़ और डॉ. नैंसी चोरड़िया ने अपने अथक श्रम से इस कार्यक्रम को सफल बनाया। अंत में, टीपीएफ उधना टीम के सेक्रेटरी धीरज आंचलिया ने सभी सहयोगियों, डॉक्टरों, प्रायोजकों और लाभार्थियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
24 फरवरी - 02 मार्च, 2025

तेरापंथ धर्मसंघ के 161वें मर्यादा महोत्सव पर विविध आयोजन

शक्तिसंपन्न, प्राणवान और प्रगतिशील धार्मिक संगठन है तेरापंथ

जयपुर।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की प्रबुद्ध सुशिष्या 'शासनगौरव' साध्वी कनकश्रीजी, 'शासनश्री' साध्वी विनयश्रीजी, साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ का 161वां मर्यादा महोत्सव तेरापंथ सभा, जयपुर के तत्वावधान में गरिमापूर्ण वातावरण में आयोजित हुआ। महामंत्रोच्चारण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

तेरापंथ महिला मंडल, जयपुर शहर एवं कन्या मंडल ने मधुर गीतों के माध्यम से संयमित एवं अनुशासित संघ के गौरव की कलात्मक प्रस्तुति दी। सी-स्कीम महिला मंडल ने मर्यादा महोत्सव के विभिन्न पक्षों को सुंदर रूप में प्रस्तुत किया।

'शासनगौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्रीजी ने कहा कि तेरापंथ जैन समाज का एक छोटा किंतु शक्तिसंपन्न, प्राणवान और प्रगतिशील धार्मिक संगठन है। आचार्य परंपरा ने संघ के प्रत्येक सदस्य को आत्मानुशासन, आत्मनियंत्रण और आत्मसंयम का बोध कराया है।

साध्वीश्री ने कहा कि मर्यादा और अनुशासन अवरोधक नहीं होते, बल्कि वे दुर्घटनाओं से बचाने वाले और सुरक्षा प्रदान करने वाले होते हैं।

आचार्य संघ की बहुमुखी प्रगति के लिए नित नए आयाम उद्घाटित करते हैं तथा प्रत्येक सदस्य की स्वस्थता, शिक्षा और समाधि के लिए सतत प्रयत्नशील रहते हैं।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने मर्यादा को विकास का पायदान बताते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक आचार्य केंद्रित संघ है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें ऐसा धर्मसंघ प्राप्त हुआ, जिसमें आज्ञा, मर्यादा और अनुशासन को प्राणों से भी अधिक महत्व दिया जाता है। जो व्यक्ति मर्यादित और अनुशासित रहता है, उसके विकास को कोई रोक नहीं सकता। वर्तमान युग की पारिवारिक परिस्थितियों पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक परिवार में कुछ नियम अवश्य होने चाहिए, जिससे जैन धर्म के संस्कार जागृत रह सकें और आने वाली पीढ़ी गलत आदतों से दूर रहे।

साध्वीवृंद ने श्रद्धा, विनय और समर्पण से ओतप्रोत गीतिका का संगान किया। साध्वी जगत्वत्सला जी एवं साध्वी कर्णिकाश्री जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए। साध्वी समितिप्रभाजी ने कविता के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति दी। तेरापंथी सभा, जयपुर के अध्यक्ष शांतिलाल गोलछा एवं अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष सरिता डागा ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीवृंद द्वारा सामूहिक लेख पत्र का उच्चारण किया गया।

सुरेंद्र सेठिया ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का सफल संयोजन साध्वी सुधाप्रभाजी ने किया।

मर्यादा की डोर ले जाती है ऊंचाइयों तक

राजाजी का करेड़ा।

मर्यादा वह पतंग की डोर है, जिसके सहारे चलने वाला व्यक्ति विकास की ऊँचाइयों को छू सकता है, जबकि इससे टूटने वाला रसातल में पहुँच सकता है। उक्त विचार साध्वी कीर्तिलताजी ने करेड़ा के ओसवाल भवन में तेरापंथ धर्मसंघ के 161वें मर्यादा महोत्सव के भव्य आयोजन में विशाल जनसमूह के समक्ष व्यक्त किए। साध्वीश्री ने तेरापंथ धर्मसंघ को नंदनवन की उपमा देते हुए कहा कि यह धर्मसंघ रूपी महल चार स्तंभों पर आधारित है— मर्यादा, समर्पण, अनुशासन एवं आज्ञा।

कार्यक्रम का शुभारंभ करेड़ा महिला मंडल के सुमधुर गीत से हुआ। साध्वी शांतिलताजी, साध्वी पूनमप्रभाजी एवं साध्वी श्रेष्ठप्रभाजी ने 'तेरापंथ, मर्यादा एवं अनुशासन' रूपी त्रिवेणी के माध्यम से एक रोचक प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने संवाद के रूप में प्रभावी कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जबकि तेरापंथ युवक परिषद एवं महिला मंडल ने संयुक्त रूप से गीत का संगान किया। तेरापंथ सभाध्यक्ष गणपत मेडतवाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम संयोजक कैलाश चावत ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए विचार साझा किए। साध्वी श्रेष्ठप्रभाजी ने मर्यादा पर सारगर्भित विचार रखे, तथा साध्वी शांतिलता ने मंच संचालन का दायित्व निभाया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मेवाड़ कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष राजकुमार फत्तावत ने अपने संबोधन में कहा कि वर्ष भर में 365 दिनों में 700 महोत्सव मनाए जाते हैं, किंतु मर्यादा महोत्सव केवल तेरापंथ में ही आयोजित होता है। कार्यक्रम में अनेकों भाइयों, महिला मंडलों ने अपनी एकल अथवा सामूहिक प्रस्तुति दी। भीलवाड़ा भिक्षु भजन मंडली ने गीतिका का संगान किया। सभा मंत्री मनोज चिप्पड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस आयोजन में सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

अहंकार व ममकार रूपी बीमारी को मिटाने की है मर्यादा औषधि

पेटलावद।

अहंकार और ममकार का संयम ही सबसे बड़ी साधना है, और मर्यादाएं इन्हें मिटाने की रामबाण औषधि हैं। अहंकार के सात प्रकार बताए गए हैं, और किसी भी प्रकार की क्षमता या उपलब्धि का अहंकार व्यक्ति को पतन की ओर ले जाता है। तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम गुरु, महामना आचार्यश्री भिक्षु ने अपनी अंतरदृष्टि से समस्याओं का निराकरण किया, जिसके परिणामस्वरूप एक नए तंत्र की रचना हुई, जिसे तेरापंथ के नाम से जाना गया। जिस संघ में आज्ञा, मर्यादा, अनुशासन, समर्पण और व्यवस्थितता होती है, वह दीर्घजीवी बनता है। आत्म-नियंत्रण और अनुशासन जीवन की महान उपलब्धियों में से एक हैं। सहनशील व्यक्ति निखरता है, जबकि सहनशक्ति के अभाव में व्यक्ति बिखर जाता है।

उपरोक्त विचार साध्वी प्रबलयशाजी ने 161वें मर्यादा महोत्सव के अवसर पर तेरापंथ भवन में आयोजित समारोह में व्यक्त किए। आपने कहा कि मर्यादाओं का तेज अपार और अनुशासन अनुपम द्वार है। मर्यादा एक ऐसा संगीत है, जो हमारी इंद्रियों को तृप्त करता है। मर्यादा और अनुशासन जीवन के लिए प्राण के समान हैं, जबकि विनय, वात्सल्य, सेवा और सामंजस्य शरीर व इंद्रियों की ऊर्जा के समान हैं। इस अवसर पर मर्यादा-पत्र का वाचन किया गया। साध्वी सुयशप्रभाजी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में तेरापंथ धर्मसंघ की विशिष्ट परंपराओं का उल्लेख किया।

साध्वी सौरभयशाजी और साध्वी सुयशप्रभाजी ने मर्यादा महोत्सव के स्वरूप, इतिहास और महत्व को रोचक शैली में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में स्थानीय श्रावक समाज, विशिष्ट अतिथि और आसपास के श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन सामूहिक संघगान और श्रावक निष्ठा पत्र के वाचन के साथ हुआ।

जीवन में मर्यादा और अनुशासन का है विशेष महत्व

छापर।

भिक्षु साधना केंद्र में 161वां मर्यादा महोत्सव तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी एवं डॉ. मुनि विनोद कुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल द्वारा किया गया। तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी स्वामी ने अपने उद्बोधन में कहा कि व्यक्ति के जीवन में मर्यादा और अनुशासन का विशेष महत्व है। तेरापंथ धर्म संघ की मर्यादा आचार्य भिक्षु से प्रारंभ होकर वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण तक अविचल रूप से प्रवाहित हो रही है। गुरु की आज्ञा परम धर्म है। सेवाकेंद्र व्यवस्थापक मुनि डॉ. विनोद कुमार जी ने भी मर्यादा महोत्सव का महत्व बताते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर राजू नाहटा, महिला मंडल मंत्री हेमा दूधोड़िया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष विनोद नाहटा ने अपने विचार व्यक्त किए। सभा द्वारा सत्र 2025-26 के भोजनशाला प्रायोजक संपतराम चोरडिया परिवार (छापर निवासी, सूरत प्रवासी) का आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष सरोज भंसाली ने किया। इस अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

आध्यात्मिक उत्कर्ष की शुभ पहल

सूरत। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, सूरत ने सामायिक के माध्यम से आध्यात्मिक उत्कर्ष की एक शुभ पहल की। यह कार्यक्रम 'शासनश्री' साध्वी मधुबाला जी ठाणा-5 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, सिटी लाइट में आयोजित किया गया। साध्वी मंजुलयशा जी ने कर्म और जीवन चक्र के बीच गहरे संबंध को स्पष्ट करते हुए महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। विषय को बेहतर ढंग से समझाने के लिए 'साइकिल ऑफ कर्म' पर मुमुक्षु अंजली सिंघवी द्वारा तैयार किया गया एक डिजिटल प्रेजेंटेशन प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम में कुल 30 सदस्य उपस्थित रहे, जिनमें सूरत अध्यक्ष सुमन सुखानी, निवर्तमान अध्यक्ष कैलाश झाबक, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य मनोज बरमेचा और अन्य टीपीएफ सदस्य शामिल थे। सभी ने सामायिक के माध्यम से अपनी आध्यात्मिक यात्रा का शुभारंभ किया और सच्ची शांति व आंतरिक पूर्णता के अर्थ को आत्मसात किया।

कार्यक्रम के अंत में यह निर्णय लिया गया कि इस प्रकार के सत्र प्रत्येक माह दो बार आयोजित किए जाएंगे। इस सफल आयोजन का संयोजन प्रियंका बुलिया और पिंकेश गादिया ने किया।

तेरापंथ धर्मसंघ के 161वें मर्यादा महोत्सव पर विविध आयोजन

तेरापंथ को 'मेरापंथ' बनाने के लिए आवश्यक है समर्पण

लाडनूं।

मुनि रणजीत कुमार जी एवं मुनि जयकुमार जी के सान्निध्य में 161वें मर्यादा महोत्सव का भव्य आयोजन ऋषभ द्वार प्रांगण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से हुआ।

तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने भक्ति-भाव से ओतप्रोत गीतिका का सुमधुर संगान किया।

मुनि रणजीत कुमार जी ने मर्यादा पत्र का वाचन करते हुए बताया कि यह मर्यादा पत्र आचार्य श्री भिक्षु द्वारा परिकल्पित एवं आचार्य श्री जयाचार्य द्वारा सुव्यवस्थित किया गया था, जिसे आचार्य श्री तुलसी ने विक्रम संवत 2017 में सरल भाषा में प्रस्तुत किया। मुनि जयकुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा— तेरापंथ को 'मेरापंथ' बनाने के लिए समर्पण, सहिष्णुता, विनम्रता और समता की भावना आवश्यक है। हमारा सौभाग्य है कि हमें चिंतामणि नंदनवन जैसा तेरापंथ धर्मसंघ प्राप्त हुआ है।

श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन तेरापंथ सभा के कोषाध्यक्ष महेंद्र बाफना द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संयोजन मुनि कौशल कुमार जी ने कुशलता से किया। इस अवसर पर उपासिका डॉ. सुशीला बाफना, तेरापंथ सभा के मंत्री राकेश कोचर, तेयुप अध्यक्ष सुमित मोदी, मंत्री राजेश बोहरा, अणुव्रत समिति लाडनूं के परामर्शक शांतिलाल बैद, ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका सपना भंसाली, टीपीएफ अध्यक्ष शोभन कोठारी एवं जैन विश्व भारती के सचिव विजय शर्मा ने अपने विचार व्यक्त किए। आयोजन में तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवक परिषद, महिला मंडल, ज्ञानशाला सहित विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी, कार्यसमिति के सदस्य एवं बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की सहभागिता रही।

मर्यादाओं से अभिमंत्रित है तेरापंथ

कांदिवली, मुंबई।

मर्यादा महोत्सव के अवसर पर मुनि कुलदीप कुमार जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु एक विलक्षण, दूरदर्शी और आत्मार्थी व्यक्तित्व थे, जिन्होंने अपने प्रखर परिश्रम एवं सूझबूझ से तेरापंथ धर्मसंघ को मर्यादाओं की ऋचाओं से अभिमंत्रित कर विकास के शिखर तक पहुँचा दिया। उनका तपोमय और ओजस्वी आदर्श जीवन सदियों तक लोकमानस के लिए प्रेरणास्रोत बना रहेगा।

मुनि मुकुल कुमार जी ने कहा कि मर्यादा सुरक्षा, प्रगति और विकास की सृजनकर्ता है। स्वयं को नियंत्रित रखने वाला कछुआ सदा सुरक्षित रहता है, दोनों तटों के बीच बहने वाली सरिता महासागर तक पहुँच जाती है, और जड़ों को जमाकर खड़ा रहने वाला वृक्ष अद्भुत रूप से पुष्पित-पल्लवित व विकसित होता है। गणविशुद्धिकरण हाजरी अपने आप में रहस्यगर्भित है।

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। इस अवसर पर तेरापंथ सभा, मुंबई के अध्यक्ष माणक धींग और श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन कांदिवली के अध्यक्ष मेघराज धाकड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा एवं तेरापंथ युवक परिषद के कार्यकर्ताओं ने सामूहिक प्रस्तुति दी।

तेरापंथ महिला मंडल की ओर से संगायिका मीनाक्षी भूतोड़िया ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथ सभा मुंबई के मंत्री दिनेश सुतरिया ने किया, तथा आभार ज्ञापन तेयुप कांदिवली के अध्यक्ष राकेश सिंघवी ने किया।

मर्यादा के बंधन से संभव है मुक्ति

कडलूर।

मर्यादाएँ हमारे जीवन को निर्माण, सुगंध, सौंदर्य और सुसंस्कार प्रदान करती हैं। जो व्यक्ति मर्यादा की लक्ष्मण रेखा में रहता है, वह श्रेष्ठता को प्राप्त करता है। इन विचारों को कडलूर जैन संघ भवन में तेरापंथ धर्मसंघ के 161वें मर्यादा महोत्सव के अवसर पर 'मर्यादा अपनाएँ - जीवन सजाएँ' विषय पर आयोजित धर्मसभा में मुनि हिमांशुकुमार जी ने व्यक्त किया।

मुनिश्री ने कहा कि भगवान महावीर की शिक्षा है कि जो भी नियमों और मर्यादा के सूत्र में बंधा रहता है, सीमित आचरण में रहता है, वह मुक्ति को प्राप्त कर सकता है।

250 वर्ष पूर्व आचार्य भिक्षु ने एक नेक और स्वच्छ मार्ग पर चलते हुए आचार क्रांति, विचार क्रांति और संघीय क्रांति का सूत्रपात किया। संघ और संगठन की मजबूती के लिए उन्होंने मर्यादाओं का निर्माण कर एक संविधान की स्थापना की। मुनि श्री ने पाँच मूल मर्यादाओं का वाचन और विश्लेषण करते हुए बताया कि ये मर्यादाएँ आज भी धर्मसंघ में यथावत बनी हुई हैं। साधु-संतों और श्रावक समाज के आध्यात्मिक एवं सामाजिक उत्थान में ये मर्यादाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

मुनिश्री ने श्रावक समाज को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को निम्नलिखित पाँच लक्ष्मण रेखाओं में रहना चाहिए—

1. **भ्रमण रेखा** – हमें यह सदैव विचार करना चाहिए कि हम कहाँ, कब और किसके साथ जा रहे हैं।
2. **मनोरंजन रेखा** – ऐसे मनोरंजन से बचें जो हमारी संस्कृति और संस्कारों को नुकसान पहुँचाए।
3. **वस्त्र रेखा** – ऐसे वस्त्र धारण न करें, जो स्वयं या सामने वाले के मन में चंचलता उत्पन्न करें।
4. **संबंधों की रेखा** – हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि किसके साथ, कितना और कैसा संबंध रखना उचित है।
5. **विवाद रेखा** – विशेषकर परिजनों के साथ वाद-विवाद होने पर भी संवाद बनाए रखें और कोर्ट-कचहरी के मामलों से बचें।

मुनि हेमंत कुमार जी ने कहा कि जब मर्यादाओं को खुशी-खुशी स्वीकार किया जाता है, तो वे सुखद बन जाती हैं। जीवन को उन्नत बनाने के लिए मर्यादाओं को हृदय से अपनाना आवश्यक है। इससे पूर्व नमस्कार महामंत्र के समुच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। स्थानीय महिलाओं ने मंगलाचरण गीत प्रस्तुत किया।

तेरापंथ उपसभा संयोजक सोभागमल सांड ने स्वागत भाषण देते हुए आभार व्यक्त किया।

संघ है तो मर्यादा है, और मर्यादा है तो संघ है

गंगाशहर।

आचार्य श्री भिक्षु द्वारा प्राण-प्रतिष्ठित और श्रीमद् जयाचार्य द्वारा सृजित तेरापंथ धर्म संघ की आन-बान-शान का प्रतीक 161वां मर्यादा महोत्सव गंगाशहर के तेरापंथ भवन में चतुर्विध धर्म संघ की उपस्थिति में श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। समारोह को संबोधित करते हुए उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ धर्म संघ के प्रथम आचार्य भिक्षु ने वि. सं. 1859 की माघ शुक्ल सप्तमी को मर्यादा पत्र की रचना की, जो मात्र एक पन्ने का दस्तावेज होते हुए भी 222 वर्षों से तेरापंथ धर्म संघ को अनुशासित एवं व्यवस्थित बनाए रखने में सहायक रहा है। तेरापंथ धर्म संघ के चतुर्थ आचार्य श्रीमद् जयाचार्य ने वि. सं. 1921 में बालोतरा में मर्यादा महोत्सव का शुभारंभ किया था, जो आज तक अनवरत रूप से मनाया जा रहा है।

साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने कहा कि संघ का महत्व तब होता है जब वह अनुशासन और मर्यादा के साथ साधना का उचित वातावरण प्रदान करता है। संघ व्यक्ति को उसकी अंतिम मंज़िल मोक्ष तक पहुँचाने में सहायक बनता है। उन्होंने कहा, संघ है तो मर्यादा है, और मर्यादा है तो संघ है। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि जैन वांग्मय में धर्म का मूल विनय को बताया गया है। विनय का अर्थ है आचार, अनुशासन और मर्यादा। मर्यादा बनाना कठिन नहीं, बल्कि मर्यादा के प्रति निष्ठा बनाए रखना कठिन है। जो व्यक्ति मेधावी होता है, वह मर्यादा का पालन करता है। दुनिया की कोई भी वस्तु मर्यादा के बिना सुरक्षित नहीं रह सकती। जो अनुशासन से जुड़ा रहता है और मर्यादा की डोर से बंधा रहता है, उसका चहुंमुखी विकास होता है।

मुनि सुमति कुमार जी ने मर्यादा महोत्सव पर अपने विचार व्यक्त किए और कार्यक्रम का संचालन किया। मुनि श्रेयांस कुमार जी ने मुक्तकों के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए, तथा साध्वी ललितकला जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर जैन लूणकरण छाजेड़ ने अपने विचार रखते हुए शिवा बस्ती में पूनमचंद आशकरण कमल बोथरा परिवार की ओर से तेरापंथ भवन निर्माण के लिए भूमि एवं भवन निर्माण की घोषणा की। पूनमचंद-मंजूदेवी का तेरापंथी सभा, तेयुप एवं महिला मंडल द्वारा अभिनंदन किया गया।

मर्यादा पत्र - शासन का छत्र

सूरतगढ़।

तेरापंथ धर्म संघ का 161वां मर्यादा महोत्सव साध्वी प्रज्ञावती जी एवं साध्वी सुदर्शनाश्री जी के सान्निध्य में श्रद्धा व उल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी वृंद द्वारा मर्यादा गीत के संगान से हुई। तेरापंथ युवक परिषद ने गीतिका के माध्यम से मर्यादा का महत्व बताया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष धनराज नवलखा ने उपस्थित श्रावक समाज का स्वागत किया। सभा द्वारा समाज सेवा में योगदान देने वाले महानुभावों का सम्मान किया गया। तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल व ज्ञानशाला के बच्चों ने कव्वाली व मर्यादा म्यूजियम नाटक के माध्यम से मर्यादा का संदेश दिया।

साध्वी प्रज्ञावती जी ने अपने उद्बोधन में मर्यादा पत्र के इतिहास के बारे हुए कहा कि आचार्य श्री भिक्षु ने संघ का मर्यादा पत्र लिखा, जो आज भी सर्वोपरि है। आचार्य श्री जीतमल द्वारा प्रारंभ किए गए इस महोत्सव का यह 161वां आयोजन है। साध्वी सुदर्शनाश्री जी ने मर्यादा के महत्व पर प्रकाश डाला। साध्वीवृंद द्वारा 'मर्यादा पत्र - शासन का छत्र' कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। मंच संचालन साध्वी मयंकयशा जी ने किया। इस अवसर पर आसपास के क्षेत्रों से श्रद्धालु उपस्थित रहे।

आयोजन में तेरापंथ महिला मंडल, युवक परिषद, कन्या मंडल, प्रोफेशनल फोरम एवं सकल जैन समाज की संस्थाओं का सहयोग रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
24 फरवरी - 02 मार्च, 2025

संबोधि

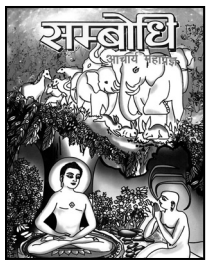

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

'सयं सयं उवट्ठाणे, सिद्धि मेव न अन्नहाः सम्प्रदायों का यह स्वर सदा ही प्रबल रहा है। सभी यह दावा करते हैं कि मेरे सम्प्रदाय में आओ तुम्हारी मुक्ति होगी। मानो परमात्मा ने सम्प्रदायों के हाथों में प्रमाणपत्र दे दिया हो। मुक्ति का सूत्र सम्प्रदायों के पास हो सकता है किन्तु मुक्ति सम्प्रदायों में नहीं है। मुक्ति का अस्तित्व सबसे मुक्त है, स्वतंत्र है। सम्प्रदाय मुक्त नहीं करते, और न कोई व्यक्ति बंधन मुक्त करता है। 'बोधिधर्म' ध्यान परंपरा के एक महान् आचार्य हुए हैं। शिष्य ने उनसे जिज्ञासा की 'बुद्ध का नाम लेना चाहिए या नहीं?' कहा 'नहीं'। अगर नाम मुंह में आ जाए तो कुल्ला कर साफ कर लेना चाहिए। मार्ग में आते हुए मिल जाए तो देखना नहीं, भाग जाना।' शिष्य को यह आशा नहीं थी। वह डरा। क्या कह रहे हैं? बोधिधर्म बोले-'सुनो! यह तो कुछ भी नहीं है। जब मेरी सत्संग होती है तब एक बार स्थिति इतनी विकट हो गई थी कि तलवार लेकर गर्दन काट देनी पड़ी, तभी मैं अपने को पा सका। शिष्य अवाक् रह गया। उसे यह देखकर और भी आश्चर्य हुआ कि गुरु रोज बुद्ध-प्रतिमा की पूजा करते हैं, नमस्कार करते हैं।

शिष्य ने पूछा-'फिर यह पूजा और नमस्कार क्यों करते हैं? 'बोधिधर्म' ने कहा वे गुरु हैं। उन्होंने स्वयं ही मुझे यह समझाया था कि जब मुझे छोड़ दोगे तभी अपने को प्राप्त कर सकोगे। यह तो सिर्फ अनुग्रह है।

महावीर भी ठीक ऐसा ही गौतम से कह रहे हैं 'वोच्छिंदि सिणेहमप्पणो'-मेरे साथ जो स्नेह है, उसे छोड़कर स्वयं में प्रतिष्ठित हो।

महावीर ने कहा है जो सम्यक्ज्ञान और सम्यग् आचरण-चरित्र सम्पन्न, होते हैं, वे मुक्त होते हैं। बुद्ध ने शील, समाधि और प्रज्ञा का सूत्र दिया है। सम्यग् ज्ञान से स्वयं का बोध होता है, और चरित्र से स्वभाव में अवस्थित रहता है। जिसने स्वयं को जान लिया और स्वयं में अपनी प्रतिष्ठा बना ली, मुक्ति उससे कैसे दूर हो सकती है? साध्य के लिए ज्ञान और आचरण अपेक्षित है।

४२. प्रशस्ताभिर्भावनाभिः, भावितः सुगतिं व्रजेत्।
अप्रशस्तभावनया, सद्गतिः स्याद् विराधिता॥

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्य भारमल जी युग

साध्वीश्री रंभाजी (पीसांगण) दीक्षा क्रमांक 72

साध्वीश्री जागरूक, शासन के सम्मुख, गुरु भक्ता, अनुशासन पालन में सजग, प्रकृति से भद्र, विवेक आदि गुणों से सम्पन्न थी। आप बड़ी तपस्विनी हुई आपने उपवास, बेले, तेले और चोले अनेक बार किये। शेष तप की तालिका इस प्रकार है- 5/15, 6,7,8/अनेक बार, 9,10, 11/अनेक बार, 12/1, 13/1, 14/1, 15/1

इस प्रकार उपवास से पन्द्रह दिन तक की लड़ी हो गई। लगभग 15 वर्ष लगातार सावन और भाद्रत महीने में एकांतर तप किया। शीतकाल में बहुत वर्षों तक शीत परिषह सहन किया।

– साभार: शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

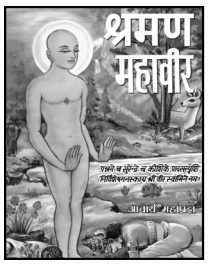

तीर्थ और तीर्थंकर

भगवान् ने कहा, 'जैसी तुम्हारी इच्छा।'

इन्द्रभूति ने अपने शिष्यों से मंत्रणा की। उन सबने अपने गुरु के पद-चिह्नों पर चलने की इच्छा प्रकट की। इन्द्रभूति अपने पांच सौ शिष्यों सहित भगवान् की शरण में आ गए, आत्म-साक्षात्कार की साधना में दीक्षित हो गए।

इन्द्रभूति ने श्रमण-नेता के पास दीक्षित होकर ब्राह्मणों की गौरवमयी परम्परा के सिर पर फिर एक बार सुयश का कलश चढ़ा दिया। ब्राह्मण विद्वान् बहुत गुणग्राही और सत्यान्वेषी रहे हैं। उनकी गुणग्राहिता और सत्यान्वेषी मनोवृत्ति ने ही उन्हें सहस्राब्दियों तक विद्या और चरित्र में शिखरस्थ बनाए रखा है।

इन्द्रभूति की दीक्षा का समाचार जल में तेल-बिन्दु की भांति सारे नगर में फैल गया। अग्निभूति और वायुभूति ने परस्पर मंत्रणा की। उन्होंने सोचा, 'भाई जिस जाल में फंसा है, वह साधारण तो नहीं है। फिर भी हमें उसकी मुक्ति का प्रयत्न करना चाहिए।

अग्निभूति अपने पांच सौ शिष्यों के साथ इन्द्रभूति को उस इन्द्रजालिक के जाल से मुक्त कराने को चले। जनता में बड़ा कुतूहल उत्पन्न हो गया। लोग परस्पर पूछने लगे, 'अब क्या होगा? इन्द्रभूति श्रमण नेता के जाल से मुक्त होंगे या अग्निभूति उसमें फंस जाएंगे?' कुछ लोगों ने कहा- 'दोनों भाई मिलकर महावीर का सामना कर सकेंगे और उन्हें अपने मार्ग पर ले जाएंगे।' कुछ लोगों ने इसका प्रतिकार किया। वे बोले, 'इन्द्रभूति क्या कम विद्वान् था? यह कोई दूसरा ही जादू है। श्रमणनेता के पास जाते ही विद्वत्ता की आंच धीमी हो जाती है। उनके सामने जाते ही मनुष्य विचार-शून्य से हो जाते हैं। हमें स्पष्ट दीख रहा है कि अग्निभूति की भी वही दशा होगी जो इन्द्रभूति की हुई।'

अग्निभूति अब चर्चा के केन्द्र बन चुके थे। वे अनेक प्रकार की चर्चा सुनते हुए महासेन वन के बाहरी कक्ष में जा पहुंचे। वहां पहुंचते ही उनकी वही गति हुई जो इन्द्रभूति की हुई थी। वे समवसरण के भीतर गए। भगवान् ने वैसे ही संबोधित किया, 'गौतम अग्निभूति ! तुम आ गए?'

अग्निभूति को अपने नाम-गोत्र के संबोधन पर आश्चर्य हुआ। उनका आश्चर्यचकित मन विकल्पों की सृष्टि कर रहा था। इधर भगवान् ने उनके आश्चर्य पर गम्भीर प्रहार करते हुए कहा, 'अग्निभूति! तुम्हें कर्म के बारे में सन्देह है। क्यों, ठीक है। न?'

अग्निभूति इन्द्रभूति के सामने देखने लगे। ऐसा लग रहा था जैसे अपने भाई से कुछ निर्देश चाह रहे हों। पर भाई क्या कहे? उनका सिर अपने आप श्रद्धानत हो गया। वे बोले, 'भन्ते! मेरा सर्वथा अप्रकाशित सन्देह प्रकाश में आ गया, तब उसका समाधान भी प्रकाश में आना चाहिए।'

'भगवान् ने अग्निभूति के विचार का समर्थन किया।' 'अग्निभूति! क्या तुम नहीं जानते, क्रिया की प्रतिक्रिया होती है?'

'भंते! जानता हूं, क्रिया की प्रतिक्रिया होती है।'

'कर्म और क्या है, क्रिया की प्रतिक्रिया ही तो है। क्या तुम नहीं जानते, हर कार्य के पीछे कारण होता है?'

'भंते! जानता हूं।'

'मनुष्य की आन्तरिक शक्ति के विकास का तारतम्य दृष्ट है, किन्तु उसकी पृष्ठभूमि में रहा हुआ कारण अदृष्ट है। वही कर्म है।'

'भंते! उस तारतम्य का कारण क्या परिस्थिति नहीं है?'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

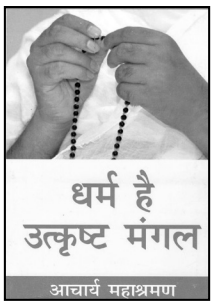

-आचार्यश्री महाश्रमण

जिनकल्पिक बनने की विधि

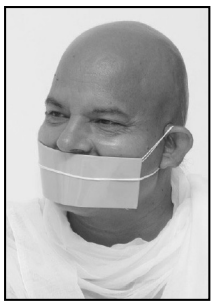

साध्यप्राप्ति के बाद स्थिरता काम्य है, परन्तु साधना-काल में वह अभीष्ट नहीं है। साधना-काल में स्थिरता का अर्थ है प्रगतिशीलता पर रोक। सब साधु एक समान नहीं होते हैं। उनमें एक-दूसरे में अनेक दृष्टियों से अन्तर हो सकता है। परन्तु लक्ष्य परम शुद्धि को प्राप्त होना रहना चाहिए। साधना के विकास के लिए विभिन्न प्रयोग हैं। उनमें एक है जिनकल्प को साधना। वृहत्कल्प भाष्य के अनुसार उसे स्वीकार करने का इच्छुक मुनि पहले पूर्वाभ्यास करता है। भय, राग आदि पर कुछ अंशों में विजय प्राप्त करता है। विशेष श्रुतवान् होता है। तप भावना, सत्त्व भावना, श्रुत भावना, एकत्व भावना और बल भावना से भावितात्मा बनकर जिनकल्पिक के अनुरूप होकर गच्छ में ही रहता हुआ साधना करता है। वह तीसरी पौरुषी (दिन के तीसरे प्रहर) में भिक्षाचार्या करता है। उसमें भी प्रान्त-रुक्ष आहार ग्रहण करता है और अभिग्रहयुक्त एषणा करता है। पश्चिमकाल में यानी संघ को अपनी सेवाएं दे चुकने के बाद व तीर्थ-अव्यवच्छिति का कार्य करने के बाद वह सत्पुरुषों द्वारा सेवित, धीर पुरुषों द्वारा आराधित, परम घोर, अत्यन्त दुरनुचर और एकान्त हितकारी जिनकल्पिक-विहार को स्वीकार करता है। वह उत्कटुक आसन का अभ्यास करता है। जिनकल्पिक बनने वाला यदि आचार्य होता है तो उसे उत्तराधिकारी को गण का दायित्व भी सौंपना होता है। वह अपने आपको साधना के अनुकूल बनाकर द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अनुकूलता होने पर संघ का सम्मेलन बुलाता है। संघ को बुलाने की संभाव्यता न होने पर अपने गण को तो अवश्य ही एकत्रित करता है। यदि तीर्थंकर हों तो तीर्थंकर के पास, वे न हों तो गणधर के पास, वे न हों तो चतुर्दशपूर्वी के पास, वे भी न हों तो अभिन्नदशपूर्वी के पास, वे भी न हों तो वटवृक्ष के नीचे और वह भी न हो तो अशोक, अश्वत्थ आदि वृक्ष के नीचे जिनकल्प को स्वीकार करता है। स्वीकरण की विधि अग्रलिखित है। आचार्य का परम कर्त्तव्य होता है अपने पीछे योग्य व्यक्ति को तैयार करना, जो गण का नेतृत्व सम्यग् रूप से कर सके। इसलिए पहले आचार्य कुछ समय के लिए एक शिष्य को प्रमुख के रूप में स्थापित करते हैं, फिर उसे पूर्णरूपेण गण का दायित्व सौंप देते हैं। श्रमण संघ से क्षमायाचना करते हैं और उन व्यक्तियों से विशेष रूप से क्षमायाचना करते हैं जिनके साथ कोई अप्रिय व्यवहार पहले हुआ है। जिनकल्प स्वीकर्ता कहता है-

जइ किंचि पमाएणं, न सुट्ठु मे वट्टिय मए पुव्विं।
तं भे खामेमि अहं निस्सल्लो निक्कसाओ य।।

'जो कोई असम्यक् व्यवहार प्रमाद से मैंने आपके साथ किया हो तो मैं आपसे निःशल्य और निष्कषाय भाव से क्षमायाचना करता हूं। आचार्य के इस प्रकार कहने पर शेष साधु आनन्द के आंसू बहाते हुए भूमि पर मस्तक टिका वन्दना करते हैं, विनम्रता से खमतखामणा करते हैं। दीक्षाक्रम के अनुसार खमतखामणा किया जाता है।

जिनकल्प के लिए उद्यत आचार्य अपने उत्तराधिकारी को शिक्षा देते हैं-यह बाल-वृद्ध साधुओं वाला संघ मैंने तुम्हें सौंपा है। बिना खेद-खिन्न हुए प्रसन्नता से इस संघ की देखरेख करना। सारणा-वारणा के द्वारा इसकी पालना करना। गुरु ने मुझे छोड़ दिया है, ऐसा विचार मत करना, क्योंकि यही परम्परा है-शिष्य तैयार हो जाते हैं, तब संघ-परम्परा को अव्यंवच्छिन्न रूप से चलाने में सक्षम मुनि को भार सौंपकर आचार्य अभ्युद्यत विहार को स्वीकार कर लेते हैं, विशेष साधना में लग जाते हैं, अपना दायित्व योग्य शिष्य को सौंप देते हैं।

तुम भी ध्यान रखना, जब शिष्यों का निष्पादन हो जाए, अन्त में इसी प्रकार अभ्युद्यत विहार स्वीकार करना।

जो मुनि बहुश्रुत हैं, तुमसे दीक्षा-पर्याय में ज्येष्ठ हैं, उनके प्रति विनयपूर्ण व्यवहार रखना। इसमें प्रमाद मत करना। जो साधु तप, स्वाध्याय और वैयावृत्त्य में से जिस उपक्रम के लिए उपयुक्त हो, उसे उसी में प्रवृत्त करना। अन्य साधुओं को शिक्षा देते हुए वे, कहते हैं- साधुओं! इस (नए आचार्य) का विनय रखना, इसकी अवज्ञा मत कर देना। यह छोटा है, दीक्षा पर्याय में हमसे सम या अवम है, हमसे अल्पतर श्रुत वाला है ऐसा सोचकर इसकी आज्ञा-पालना में प्रमाद करना। इसका तिरस्कार न करना। यह तुम्हारे लिए मैं ही हूं। इसने मेरा स्थान ग्रहण कर लिया है। तुम्हारे लिए यह पूज्य है, यह बहुत गुणवान है। इस प्रकार उत्तराधिकारी और शेष संघ दोनों को शिक्षा देकर वे वहाँ से विहार कर देते हैं।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

फरवरी 2025
सप्ताह के विशेष दिन

03 मार्च	07 मार्च
भगवान मल्लिनाथ च्यवन कल्याणक	भगवान संभवनाथ च्यवन कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री मघराजजी युग

मुनिश्री पूनमचंदजी (पचपदरा) दीक्षा क्रमांक 192

मुनिश्री बड़े तपस्वी थे। आपने उपवास, बेले, आदि बहुत किये। एकान्तर, बेले-बेले तथा तेले-तेले तप भी किया। उनके तप की तालिका इस प्रकार है- उपवास/969, 2/307, 3/96, 4/9, 5/1 तप के कुल दिन 1912 हुए, जिनके 5 वर्ष 3 महीने 22 दिन होते हैं।

- साभार: शासन समुद्र -

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
24 फरवरी - 02 मार्च, 2025

76वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य पर विभिन्न आयोजन

हैदराबाद

अभातेममं के निर्देशन में गणतंत्र दिवस पर बोलाराम गवर्नमेंट स्कूल में कन्या सुरक्षा सर्कल एवं स्तंभ पर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद ने कार्यक्रम आयोजित किया। स्कूल की प्रिंसिपल बी. सुनीता ने महिला मंडल की बहनों का स्वागत किया। उपाध्यक्ष अंजू चौरडिया ने गणतंत्र दिवस की सभी को शुभकामनाएं दी। स्कूल के बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। महिला मंडल की ओर से 350 बच्चों को जुराब व बिस्किट वितरित किए गये। कार्यक्रम में महिला मंडल सदस्यों की उपस्थिति रही। बोलाराम के अनिल कातरेला का विशेष सहयोग रहा।

बेहाला, कोलकाता

तेरापंथ युवक परिषद, बेहाला द्वारा शांतिनिवास वृद्धाश्रम में गणतंत्र दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत वृद्धाश्रम के एक निवासी द्वारा प्रेरणादायक भाषण से हुई। इसके बाद, परिषद के सदस्यों द्वारा नवकार मंत्र जाप किया गया। राष्ट्रीय ध्वज को सम्मानपूर्वक फहराने के बाद सभी ने राष्ट्रगान गाया। इस अवसर पर परिषद के कई सदस्यों ने वृद्धाश्रम के निवासियों के लिए आवश्यक खाद्य सामग्री का दान किया।

राजाजीनगर

76वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में रियायती दर पर स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। स्वास्थ्य जांच शिविर के अंतर्गत संपूर्ण रक्त गणना, लिपिड, कोलेस्ट्रॉल, लीवर, थायराइड, किडनी एवं इलेक्ट्रोलाइट्स संबंधित जांच केवल 76 रुपये प्रति टेस्ट दर पर की गई। इस शिविर में कुल 106 लाभार्थी लाभान्वित हुए। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया, जयंतीलाल गांधी, मुकेश भंडारी, मोहन चौरड़िया, एवं अभिषेक पीपाड़ा ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

तेयुप द्वारा 76वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में मेगा ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन दो स्थानों - श्री राजेंद्र सूरीश्वर मंदिर श्रीरामपुरम एवं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन चैरिटेबल ट्रस्ट महालक्ष्मी लेआऊट के मन्दिर परिसर में आयोजित किया गया। रक्तदान शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की गई। शिविर में कुल 25 यूनिट रक्त का संग्रह हुआ। ब्लड बैंक ने परिषद परिवार को सम्मानित करते हुए धन्यवाद व्यक्त किया। शिविर के सुव्यवस्थित आयोजन में मंत्री जयंतीलाल गाँधी, सचिन हिंगड़, भावेश बोथरा, हरीश पोरवाड़, साहिल सहलोत एवं दर्शन पोरवाड़ का अथक श्रम नियोजित हुआ।

हुबली

अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप हुबली ने गणतंत्र दिवस पर तेरापंथ भवन हुबली में बृहत् रक्तदान शिविर (MBDD) का आयोजन किया। इस आयोजन में सबके सहयोग से 90 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप हुबली पिछले 12 सालों से प्रति वर्ष कई शिविरों का आयोजन करती आ रही है। इस अभियान में परिषद् के साथ गुलाबचंद कटारिया - राज्यपाल पंजाब, महेश तेंगिंकाई - सांसद हुबली सेंट्रल, महेंद्र सिंघी - समाज सेवी और संस्थापक चेयरमैन संस्कार स्कूल, रमेश बाफना - चेयरमैन आर्यंस स्कूल आदि का समर्थन प्राप्त हुआ। भारतीय जैन संगठन, भैरू भक्ति मंडल, राजपुरोहित युवा संगठन, तेरापंथ सभा, अणुव्रत समिति आदि संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम के संयोजक सागर पालगोता और सह संयोजक संतोष बोहरा ने कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम के मुख्य प्रायोजक स्व. जितेंद्र कुमार बसंती देवी चोपड़ा के सुपुत्र हेमल चोपड़ा रहे। तेयुप अध्यक्ष विशाल बोहरा ने बताया के इस अभियान में महिला, बच्चे, बुजुर्ग, युवा-युवती आदि सबने अपनी क्षमता अनुसार सहयोग दिया। मंत्री विनोद भंसाली ने आभार व्यक्त किया।

हैदराबाद

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, हैदराबाद ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर जैन समुदाय में स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्वास्थ्य और पोषण शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस शिविर की शुरुआत साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के मंगलपाठ से हुई। यह शिविर श्री स्थानकवासी जैन संघ, डी.वी. कॉलोनी में आयोजित किया गया। शिविर में प्रसिद्ध चिकित्सा विशेषज्ञों ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। होम्योपैथ और पोषण विशेषज्ञ डॉ. श्वेता मेहता ने शिविर में निःशुल्क स्वास्थ्य परामर्श दिया। सभी आयु वर्ग के लोगों ने इस कार्यक्रम का लाभ उठाया और अपनी सेहत को बेहतर बनाने के लिए व्यक्तिगत सुझाव प्राप्त किए। कार्यक्रम में नेशनल टीम से ऋषभ दुगड़ और स्थानीय टीम से अध्यक्ष विरेंद्र घोषल, मंत्री निखिल कोटेचा, सह-मंत्री वर्षा बैद, शिखा सुराना की उपस्थिति रही।शिविर में लगभग 41 प्रतिभागियों ने स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ लिया।

साउथ हावड़ा

देश के 76 वें गणतंत्र दिवस पर तेरापंथ युवक परिषद साउथ हावड़ा द्वारा ध्वजारोहण का कार्यक्रम महाप्रज्ञ स्तम्भ पर बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। तेयुप साउथ हावड़ा के अध्यक्ष गगनदीप बैद ने उपस्थित सभी का स्वागत अभिनंदन करते हुए सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं दी एवं अपने वक्तव्य में कहा हमारा संविधान हमारा स्वाभिमान है। मुख्य अतिथि अशोक कोठारी द्वारा ध्वज फहराया गया एवं सभी ने राष्ट्रगान का सामूहिक संगान किया। साउथ हावड़ा सभा के ट्रस्टी बाबूलाल दुगड़, साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना, महिला मंडल मंत्री रेखा बैंगानी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष दीपक नखत ने अपने भाव व्यक्त किए। तेयुप साउथ हावड़ा की महाश्रमण भजन मण्डली के सदस्यों द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी गई।

कार्यक्रम में पूर्व अध्यक्ष, प्रबंध मंडल सदस्य, कार्यसमिति सदस्य, आजीवन सदस्य, युवक, किशोरों सहित कुल 60 सदस्यों की सहभागिता रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री अमित बेगवानी ने किया एवं आभार ज्ञापन संयोजक नीरज बांठिया ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संगठन मंत्री एवं प्रभारी आदेश चोरड़िया, संजोयक नीरज बांठिया का विशेष श्रम रहा।

टिटिलागढ़

अभातेममं के निर्देशानुसार नवनिर्मित महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्कल एवं बेंच स्थल पर गणतंत्र दिवस के अवसर पर महिला मंडल की अध्यक्षा बॉबी जैन ने तेरापंथ समाज की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया। अध्यक्ष बॉबी जैन ने सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हमारे लिए बहुत गर्व एवं खुशी की बात है कि कन्या सुरक्षा सर्कल एवं बेंच स्थल पर हमें गणतंत्र दिवस मनाने का अवसर प्राप्त हुआ है। वरिष्ठ श्रावक एवं उपासक ओमप्रकाश जैन, खुशबू जैन ने अपने विचार रखे। सुमधुर गायिका सुभद्रा जैन ने देश भक्ति गीत का संगान किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन कृष्णा जैन ने किया।

राजाराजेश्वरी नगर

मुनि मोहजीतकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में राजाराजेश्वरी नगर के तेरापंथ भवन में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित हुए। गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वज फहराया गया। साथ ही मुनिवृन्द के प्रति मंगलभावना एवं परीक्षार्थी सम्मान समारोह का शुभारंभ मुनिश्री के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा- भारतीय और मानवीय संस्कृति की मूल पहचान सम्यक् आचार, विचार, संस्कार और व्यवहार के साथ जुड़ी हुई है। इसके लिए जैन विद्या का प्रारम्भिक ज्ञान और तत्त्व दर्शन का बोध होना चाहिए। वर्तमान के गूगल युग में आवश्यकता है कि नई पीढी गुरु ज्ञान से जुड़े। शुरुआती ज्ञान का आधार जैन विद्या, सद्संस्कार आध्यात्मिक आचार का विकास है। मुनि भव्यकुमार जी ने गणतंत्र दिवस का महत्व बताते हुए कहा चाहे राष्ट्र हो या संस्था, सभी के सुचारु संचालन के लिए संविधान अर्थात मर्यादा आवश्यक है। तेरापंथी सभा की उपाध्यक्ष सरोज आर बैद ने समागत श्रावक समाज का स्वागत करते हुए मुनिवृन्द के प्रवास को क्षेत्र के लिए सोभाग्यपूर्ण बताया तथा सुखद विहार की मंगलभावना व्यक्त की। ट्रस्ट के अध्यक्ष मनोज डागा, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष गुलाब बाँठिया, तेममं से अध्यक्ष सुमन पटावरी, सभा के प्रथम अध्यक्ष कमलसिंह दुगड़ आदि ने अपनी भावना व्यक्त की। सभी श्रावकों ने मुनिवृन्द से खमतखामणा किया। जैन विद्या परीक्षा एवं आगम मंथन प्रतियोगिता में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार वितरित किए गए। केन्द्र व्यवस्थापिका सीमा छाजेड़ ने परीक्षा की रिपोर्ट प्रस्तुत की। सक्रिय सहयोग हेतु सभाध्यक्ष राकेश छाजेड़ के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया तथा सहयोगी संगीता डागा, शारदा बैद, आशा लोढ़ा, सीमा दक, दीपिका देरासरिया के योगदान का उल्लेख किया। संकाय की दक्षिण कर्नाटक प्रभारी कंचन छाजेड़ ने संकाय संबंधी एवं आगम मंथन सहयोगी विकास दुगड़ ने प्रतियोगिता की जानकारी दी। महिला मंडल द्वारा मंगलभावना गीत प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री गुलाब बाँठिया एवं आशा लोढ़ा ने किया तथा आभार ज्ञापन विकास दुगड़ ने किया।

श्रीडूंगरगढ़

तेरापंथ महिला मंडल ने 76वें गणतंत्र दिवस पर महिला मंडल भवन में अध्यक्ष सुनीता डागा व मंत्री संगीता बोथरा ने ध्वज फहरा कर राष्ट्रगान का संगान किया। मंगलाचरण उर्मिला घीया ने किया। मंजू झाबक, अंबिका डागा ने नारी शक्ति को प्रेरित करते हुए अपने विचार रखे। कन्या मंडल संयोजिका रौनक मालू व सहसंयोजिका प्रेक्षा पुगलिया ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए। गणतंत्र दिवस की सबको बधाई देते हुए मंत्री संगीता बोथरा ने सबका आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन कांता बरडिया ने किया।

विजयनगर

76 वे गणतंत्र दिवस के अवसर पर तेयुप विजयनगर के साथियों ने तुमकुर रोड़ स्थित सरकारी स्कूल हिरेहल्ली, टी बेगुर, सीबी, ब्रह्मसंद्र गाँव में बच्चों के संग गणतंत्र दिवस मनाया गया। ज्ञातव्य है कि तेयुप विजयनगर द्वारा इन चारों गाँवों के सरकारी विद्यालयों में आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा केंद्र स्थापित हैं। गणतंत्र दिवस पर तिरंगे को फहराया गया। तेयुप विजयनगर के वरिष्ठ उपाध्यक्ष विकास बांठिया, प्रबंध मंडल, पंचायत पदाधिकारी के समक्ष विद्यार्थियों द्वारा मार्च पास्ट किया गया। विद्यालय के छात्रों ने शानदार प्रस्तुतियां दी। स्कूल प्रधानाध्यापक ने सबका स्वागत किया। उपाध्यक्ष विकास बांठिया एवं गणमान्य अतिथियों ने गणतंत्र दिवस की शुभकामना दी। मंत्री संजय भटेवरा ने छात्रों को नशा मुक्त एवं अच्छे नागरिक बनने का संकल्प करवाया। इस अवसर पर सामाजिक सेवा कार्य के तहत स्वर्गीय घेवरचंद की स्मृति में धर्मपत्नी प्रेमा बाई टेबा, महावीर, गौतम टेबा परिवार ठीकरवास कला, फतेह चंद, सूरज चिंडालिया, सरदारशहर, स्व. दलाराम चौधरी की स्मृति में नंदी ग्लास एंड प्लाईवुड, नयनदहल्ली, एवं प्रबंध मंडल के सहयोग से चारों सरकारी विद्यालयों के लगभग 500 बच्चों को गिफ्ट वितरित किया गया। कार्यक्रम में परिषद् से सह मंत्री पवन बैद, कोषाध्यक्ष अमित नाहटा, कार्यसमिति सदस्य आशीष सिंघी, बसंत डागा की उपस्तिथि रही।

76वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य पर विभिन्न आयोजन

कांदिवली, मुंबई

तेरापंथ महिला मंडल कांदिवली, मुंबई द्वारा 76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर कांदिवली ईस्ट स्थित कन्या सुरक्षा स्तंभ पर ध्वजारोहण का आयोजन किया गया। संकल्प गीत द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। कांदिवली के नगर सेवक ठाकुर सागर सिंह ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। कांदिवली महिला मंडल अध्यक्षा विभा श्रीश्रीमाल ने सभी का स्वागत करते हुए सभी को 76वें गणतंत्र दिवस की शुभकामनाओं के साथ अभातेममं द्वारा निर्देशित समृद्ध राष्ट्र योजना की जानकारी देते हुए देश के प्रति अपनी जागरूकता एवं अपने कर्तव्यों का पालन करने की प्रेरणा प्रदान की। मुंबई सभा के उपाध्यक्ष दलपत बाबेल, फाउंडेशन के मंत्री प्यारचंद मेहता, कांदिवली सभा के अध्यक्ष ज्ञानमल भंडारी, निवर्तमान अध्यक्ष पारसमल दुग्गड़ की विशेष उपस्थिति रही। तेरापंथ युवक परिषद, मुंबई महिला मंडल के परामर्शक, संरक्षक, कार्य समिति सदस्य, कन्या मंडल एवं किशोर मंडल के सदस्यों की उपस्थिति रही। कन्या सुरक्षा स्तंभ पर ध्वजारोहण के पश्चात कांदिवली तेरापंथ भवन में मुनि कुलदीप कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित ध्वजारोहण कार्यक्रम में भी महिला मंडल की बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही।

टिटिलागढ़

ज्ञानशाला परिवार द्वारा आयोजित गणतंत्र दिवस कार्यक्रम नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के पश्चात राष्ट्र गान के संगान के साथ प्रारम्भ हुआ। ज्ञानशाला संयोजिका कृष्णा जैन ने गणतंत्र दिवस की शुभकामना दी। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका बहनों एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने अपनी प्रस्तुति दी। बच्चों हेतु आयोजित भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर अक्षांश जैन एवं समर्थ जैन तथा द्वितीय स्थान पर भवी जैन एवं तन्वी बिरमिवाल रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका मीनू जैन ने किया।

गुवाहाटी

तेरापंथ सभा गुवाहाटी के संरक्षण में, तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में, तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 76वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में ध्वजारोहण का आयोजन किया गया। तेरापंथ धर्म स्थल परिसर में सभा उपाध्यक्ष रायचंद पटावरी, तेयुप अध्यक्ष सतीश कुमार भदानी, मंत्री पंकज सेठिया तथा सभी संघीय संस्थाओं के अध्यक्षों एवं मंत्रियों ने मिलकर राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

कार्यक्रम में एटीडीसी के प्रवृत्ति सलाहकार निर्मल बैंगानी, सह प्रभारी आलोक छाजेड़ एवं अणुविभा के उपाध्यक्ष कुसुम लूणिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। तेयुप के पूर्व अध्यक्षों एवं मंत्रियों, तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल, टीपीएफ, अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों तथा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों सहित श्रावक समाज की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में किशोर मंडल के प्रभारी हितेश गुलगुलिया एवं किशोर मंडल के सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। किशोर मंडल के सह संयोजक कौशल बुच्चा ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

उदयपुर

तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ किशोर मंडल, उदयपुर द्वारा गणतंत्र दिवस के अवसर पर सायफन स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय, उदयपुर में 70 जरूरतमंद बच्चों को नए स्कूल बैग वितरित किये गए। महिला मंडल द्वारा गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में बच्चों को खाद्य सामग्री वितरित की गई। आयोजन में परिषद के मंत्री साजन मांडोत, पदाधिकारी, किशोर मंडल प्रभारी अंकित रूनवाल, महिला मंडल अध्यक्षा सीमा बाबेल, मंत्री ज्योति सहित था महिला मंडल के सदस्यों की उपस्थिति रही।

साउथ कोलकाता

76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद् साउथ कोलकाता एवं तेरापंथ किशोर मंडल साउथ कोलकाता के सदस्यों ने तेरापंथ भवन साउथ कोलकाता में साउथ सभा, टीपीएफ, तेरापंथ महिला मंडल एवं कन्या मंडल के साथ मिलकर ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन किया। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, साउथ कोलकाता के अध्यक्ष विनोद चोरड़िया ने ध्वज फहराकर देश के जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की। तेयुप साउथ कोलकाता के अध्यक्ष मोहित बैद, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रदीप सिंघी, टीपीएफ के अध्यक्ष नरेंद्र सिरोहिया तथा तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा पदमा कोचर ने अपने विचार व्यक्त किए। सभा के सहमंत्री मनोज दूगड़ ने कुशल संचालन करते हुए सभी पदाधिकारियों एवं श्रावक समाज का आभार व्यक्त किया।

एटीडीसी एवं टीपीएफ के तत्वावधान में मेगा मेडिकल कैंप का आयोजन

जयपुर।

76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, जयपुर एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के संयुक्त तत्वावधान में मेगा मेडिकल कैंप का आयोजन अणुविभा जयपुर केंद्र एवं महावीर साधना केंद्र, जवाहर नगर स्थित कलेक्शन सेंटर में किया गया। इस शिविर में विभिन्न विशेषज्ञ चिकित्सकों ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं, जिनमें डॉ. अनिल भंडारी (बाल रोग विशेषज्ञ), डॉ. राघव मेहता (कान, नाक, गला रोग विशेषज्ञ), डॉ. चित्रा पांडेय (नेत्र रोग विशेषज्ञ), डॉ. शुभम शर्मा (चेस्ट फिजीशियन), डॉ. विभा बैद (आहार विशेषज्ञ), डॉ. स्वाति गुप्ता (एक्यूप्रेशर एवं सुजोक विशेषज्ञ), डॉ. राहुल जैन (आयुर्वेद विशेषज्ञ), डॉ. अपूर्वा जैन (होम्योपैथ विशेषज्ञ), डॉ. राजीव दुगड़ (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. अमित बैंगानी (जनरल एवं लेप्रोस्कोपिक सर्जन), डॉ. दिनेश जैन एवं डॉ. अमित गुप्ता (दंत रोग विशेषज्ञ) तथा डॉ. निधि मेहता (प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ) शामिल रहे। इस अवसर पर थायराइड, लिपिड, लिवर, किडनी प्रोफाइल, इलेक्ट्रोलाइट, सीबीसी और ईसीजी की जांच रियायती दरों पर की गई। इसके अतिरिक्त, स्वास्थ्य पैकेज पर 24% की विशेष छूट भी प्रदान की गई। इस मेगा हेल्थ कैंप में 157 लाभार्थियों ने एक ही दिन में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। कार्यक्रम में अणुविभा जयपुर केंद्र के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, सेन्टर के चेयरमैन गौतम बरड़िया, पदाधिकारी, संयोजक श्रेयांस बैंगानी व सौरभ जैन, सहित तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की अध्यक्षा प्रज्ञा कावड़िया एवं उनकी टीम ने सक्रिय भूमिका निभाई। गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, जयपुर में ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अणुविभा जयपुर केंद्र के अध्यक्ष पन्नालाल बैद एवं न्यास के चेयरमैन गौतम बरड़िया ने ध्वज फहराया। इस अवसर पर वरिष्ठ श्रावक भीखमचंद मांडोत, न्यास के उपाध्यक्ष प्रवीण जैन, सेंटर का स्टाफ एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे। आयोजन में संयोजक श्रेयांस बैंगानी एवं सौरभ जैन का विशेष योगदान रहा।

रक्तदान शिविर का आयोजन

साउथ हावड़ा। तेरापंथ युवक परिषद साउथ हावड़ा ने पंचशील वेलफेयर रेजिडेंट्स सोसाइटी के सहयोग से मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव का आयोजन किया। पंचशील अपार्टमेंट में आयोजित इस रक्तदान शिविर का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र संगान से हुआ। कार्यक्रम में परिषद अध्यक्ष गगन दीप बैद सहित कई पदाधिकारी, अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य सूर्य प्रकाश डागा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष दीपक नखत, किशोर एवं युवा साथियों की अच्छी उपस्थिति रही। कुल 35 यूनिट रक्त संग्रह हुआ। आयोजन में पर्यवेक्षक विक्रम भंडारी, संयोजक अजीत दुगड़ और कार्यसमिति सदस्य करण गोलछा का विशेष योगदान रहा।

आध्यात्मिक मंगल प्रवेश

कांदिवली, मुंबई।

मुनि कुलदीप कुमारजी ठाणा 2 का ने तेरापंथ भवन, कांदिवली में मंगल प्रवेश हुआ। गणतंत्र दिवस पर मुनिश्री ने प्रेरणा देते हुए कहा कि आज गणतंत्र दिवस है, यह वह दिन है जब हमारे देश में संविधान लागू हुआ था, और यह प्रत्येक भारतीय के लिए गौरव का विषय है। हमारे तेरापंथ धर्मसंघ का संविधान मर्यादा एवं अनुशासन पर आधारित है, जिसे महामना भिक्षु ने लिखा और जयाचार्य ने महोत्सव का रूप दिया। इसी भवन में आगामी मर्यादा महोत्सव आयोजित किया जाएगा, जिसमें अधिकाधिक सहभागिता की प्रेरणा दी गई। मुनि मुकुलकुमारजी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम के प्रारम्भ में मुंबई सभा अध्यक्ष माणक धींग ने स्वागत वक्तव्य दिया। श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के मंत्री प्यारचंद मेहता, कांदिवली सभा के अध्यक्ष ज्ञानमल भंडारी, मलाड सभा के मंत्री सुरेश धोका, तेयुप कांदिवली के राकेश सिंघवी, तेयुप मलाड के जयंती, महिला मंडल कांदिवली एवं मलाड की ओर से विभा श्रीश्रीमाल ने अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन मुंबई सभा के मंत्री दिनेश सुतरिया ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

संकल्प की दृढ़ता ही सफलता की कुंजी

उदासर।

क्षेत्र की मोना इंडस्ट्रीज में आयोजित प्रवचन में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी ने कहा कि व्यक्ति को अपने संकल्प दृढ़ रखने चाहिए। जो लोग अपने संकल्पों का पालन करते हैं, उन्हें सफलता अवश्य प्राप्त होती है। उन्होंने नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा देते हुए बताया कि सद्गुणी व्यक्ति की प्रशंसा हर स्थान पर होती है। मुनिश्री ने फैक्ट्री के कर्मचारियों को नशामुक्त रहने के लिए प्रेरित किया और पान पराग, गुटका तथा जर्दा आदि नशीले पदार्थों का त्याग करवाया। उन्होंने कहा कि जैन धर्म में तीन करण और तीन योग के माध्यम से त्याग पर बल दिया गया है। पच्चीस बोलों की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि कल्याणकारी कार्यों में संलग्न रहना चाहिए ताकि मृत्यु के उपरांत उच्च गति प्राप्त हो सके।

मुनिश्री ने पुरुषार्थ का महत्व बताते हुए कहा कि परिश्रम से भाग्य का निर्माण होता है और पुरुषार्थ असंभव को भी संभव बना सकता है। व्यक्ति को पद के लिए प्रयास नहीं करना चाहिए और अनावश्यक महत्वाकांक्षा नहीं रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि किसी से भूल हो जाए तो उसे स्वीकार कर प्रायश्चित करना चाहिए और स्वयं को सुधारने का प्रयास करना चाहिए। संयम से प्रगति और असंयम से दुर्गति होती है। भगवान महावीर की वाणी व्यक्ति को जागरूक करती है। जीवन को नैतिक बनाने के लिए हृदय में अणुव्रत होना आवश्यक है। प्रवचन में उदासर, गंगाशहर और बीकानेर से बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे। अंत में सभी का आभार जेठमल, मनीष, पवन छाजेड़ और बच्छराज भूरा ने व्यक्त किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
24 फरवरी - 02 मार्च, 2025

मुख्यमुनिर्महावीरो

मुख्यमुनि महावीर कुमारजी का फाल्गुन कृष्णा पंचमी, 2025 को चौबीसवां दीक्षा दिवस आया। पूज्यवर आचार्यश्री महाश्रमणजी भुज (कच्छ) में मर्यादा महोत्सव का प्रवास संपन्न कर, विहारकर आचार्य महाश्रमण इंटरनेशनल स्कूल, भुज के परिपार्श्व में विराजे। वहाँ पूज्यवर ने मुख्य मुनि प्रवर को आशीर्वाद प्रदान किया।

सायंकाल, मिरजापर गांव की कुमारशाला (विद्यालय) में, रात्रि के समय, पूज्यवर ने संतों को संस्कृत में श्लोक बनाने के लिए फरमाया—

आचार्यवर : 'मुख्यमुनिर्महावीरो', यह प्रथम चरण है, आगे की पूर्ति करो।

पूज्यप्रवर की दृष्टि की आराधना करते हुए, कई संतों ने संस्कृत में श्लोक बनाए।

पूज्यवर ने विशेष आशीर्वाद प्रदान कराते हुए तत्काल आशु कविता के रूप में फरमाया—

मुख्यमुनिर्महावीरो धर्मसंघे महामुनिः।
तेरापंथस्य सेवायां लीनस्तिष्ठेत् सदा मुदा।।

(मुख्यमुनि महावीर धर्मसंघ में महान मुनि हैं। ये प्रसन्नता के साथ तेरापंथ की सेवा में सदा लीन रहें।)

पूज्यवर ने सभी संतों के लिए भी फरमाया—

सर्वेऽपि साधवः संघे सुविनीताः सुशीलकाः।
प्रसन्नमनसः प्राज्ञाः तिष्ठेयुर्गणसेवकाः।।

(सुविनीत, सुशील, प्रसन्न मन वाले, प्राज्ञ सभी संत संघ में गणसेवक होकर रहें।)

ज्ञानध्यानसुलीनाः स्युः तार्किकाः सूत्रपाठकाः।
विनम्राः धृतिमन्तश्च सेवा-धर्मपरायणाः।।

(ज्ञान-ध्यान में अच्छी तरह लीन, तार्किक, सूत्रपाठक, विनम्र, धृतिमान और सेवा-धर्म परायण हों।)

साधूनां वन्दनं पुण्यं, दर्शनं च पवित्रकम्।
साधुसेवा महापुण्या, धन्या धन्याः सुसाधवः।।

(सुसाधु धन्य-धन्य हैं, साधुओं को वंदन करना पुण्य है, उनके दर्शन पवित्र हैं, साधु-सेवा महान पुण्य है।)

संक्षिप्त खबर

सामाजिक सेवा कार्य

साउथ हावड़ा। गणतंत्र दिवस एवं स्व. हेमलता कोठारी की पुण्य तिथि पर पारिवारिक जनों द्वारा क्षेत्र के बादामी देवी आश्रम के निकट बस्ती के लगभग 150 बच्चों को खाद्य सामग्री वितरण का कार्य किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ सामूहिक मंत्रोच्चार के साथ किया गया। परिषद के अध्यक्ष गगन दीप बैद ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम में सभा के ट्रस्टी अशोक कोठारी, तेयुप मंत्री अमित बेगवानी, पदाधिकारी गण, संयोजक मनीष बैद, नीरज बांठिया, कार्यसमिति सदस्य आशीष बैद, किशोर मंडल सदस्य लोकेश सिरोहिया, साहिल नाहर की उपस्थिति रही। प्रायोजक परिवार से निर्मल कुमार कोठारी ने परिषद् के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन एवं आभार सामाजिक सेवा कार्य के संयोजक मनीष बैद ने किया।

संथारा प्रत्याख्यान

सूरत। रत्नीदेवी लुणिया धर्मपत्नी स्व. हंसराज लुणिया (चाड़वास निवासी - सुरत प्रवासी) को देव-गुरु-धर्म की साक्षी से पारिवारिक जनों की अनुमति एवं समाज के श्रावकों की उपस्थिति में उनके सुपुत्र विनोद लुणिया ने तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया।

- **जहां तक संभव हो सके, परावलंबी बनने से बचें**
- **जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।**

– आचार्य श्री महाश्रमण

'राष्ट्र के उत्थान में अणुव्रत की सार्थकता' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

गुवाहाटी।

अणुव्रत समिति, गुवाहाटी द्वारा 'राष्ट्र के उत्थान में अणुव्रत की सार्थकता' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के तौर पर अणुविभा की उपाध्यक्षा डॉ. कुसुम लुणिया, कार्यकारिणी सदस्य छत्तरसिंह चौरड़िया एवं सदस्य डॉ. धनपत लुणिया उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ अणुव्रत गीत एवं अणुव्रत आचार संहिता के वाचन से हुआ। तत्पश्चात अध्यक्ष बजरंग बैद ने सभी का स्वागत अभिनंदन करते हुए बताया कि अणुव्रत एक ऐसा मंच है, जिससे राष्ट्र का उत्थान हो सकता है। इसका पालन करने से जीवन में नैतिकता, प्रामाणिकता, संयम का विकास होने साथ ही सांप्रदायिकता सौहार्द बढ़ता है। डॉ. कुसुम लुणिया ने अणुविभा के आयामों की विस्तृत जानकारी देते हुए समिति को सभी आयामों को क्रियान्वित करने की प्रेरणा दी।

इस प्रतियोगिता में 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया। निर्णायक की भूमिका में सरिता सांखला एवं डॉ. सारिका दुगड़ रहीं। कार्यक्रम के संयोजक कमलेश रांका, निर्मल बैद एवं रंजना भंसाली का सराहनीय श्रम रहा। मंत्री संजय चौरड़िया ने समिति की गतिविधियों की जानकारी देते हुए अणुव्रत के सभी आयामों को पूर्ण करने का आश्वासन दिया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आस्था नाहटा, द्वितीय स्थान संगीता बैद एवं तृतीय स्थान मनोज संचेती ने प्राप्त किया। सभी विजेताओं एवं प्रतिभागियों को समिति की ओर से पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष रायचंद पटावरी के साथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम आदि संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित थे।

आध्यात्मिक जप अनुष्ठान का आयोजन

चिकमगलूरु।

साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में रवि मूल नक्षत्र में आगम गाथा का आध्यात्मिक अनुष्ठान तेरापंथ भवन चिकमगलूरु में आयोजित हुआ। नमस्कार महामंत्र के साथ अनुष्ठान का प्रारंभ हुआ। साध्वी संयमलता जी ने कहा - आत्मशुद्धि का एक आयाम है जप अनुष्ठान। हम आत्मा को सुरक्षित एवं निर्मल बनाने हेतु निरंतर मंत्रों की साधना करते रहें। मंत्रों की साधना आत्मकल्याण के लिए करनी चाहिए, किसी दूसरे व्यक्ति का अहित करने के लिए नहीं। साध्वी मार्दवश्रीजी ने अनुष्ठान करवाते हुए स्वर विज्ञान के बारे में जानकारी देते हुए कहा यह मानसिक एकाग्रता व सौम्यता का प्रतीक है। स्वर तीन प्रकार के होते हैं - चंद्र स्वर, सूर्य स्वर और सुषुम्ना। जप अनुष्ठान का प्रारंभ चंद्र स्वर के साथ करने से शीघ्र सफलता मिलती है। अर्हम की ध्वनि का पिरामिड बना, रक्षाकवच का निर्माण किया गया जो बाह्य व आंतरिक व्यवधान रोकने वाला है। आचार्य भिक्षु व जयाचार्य द्वारा सिद्ध मंत्र एवं आगम गाथा का लयबद्ध एवं प्राण ऊर्जा के साथ संगान किया गया। साध्वीश्री ने जप के एक-एक अक्षर का महत्व, उपयोग विधि का विवेचन किया। श्रावक-श्राविकाओं ने केसरिया व सफेद परिधान में सज्जित होकर स्वस्तिक व सिद्धालय की आकृति में जप अनुष्ठान किया। अनुष्ठान में चिकमगलूरु व मंड्या कन्या मंडल की अच्छी उपस्थिति रही। तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में आयोजित इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रसन्न डोसी, यश डोसी एवं मंत्री राकेश कावड़िया का सहयोग रहा।

रक्तदान शिविर एवं बेसिक लाइफ सपोर्ट ट्रेनिंग का आयोजन

इंदौर।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम एवं एम.ओ.सी. कैंसर केयर एवं रिसर्च सेंटर इंदौर के संयुक्त तत्वावधान में तेरापंथ भवन पलासिया में रक्तदान शिविर का शुभारम्भ डॉ. मुनि अभिजीत कुमार जी एवं मुनि जागृतकुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ।

मुनि अभिजीत कुमार जी ने कहा - व्यक्ति के जीवन में रोल एवं रूल्स का बहुत महत्व है। दैनिक जीवन में हम जीवनोपयोगी नियमों का पालन करेंगे तो हम कैंसर एवं अन्य घातक व्याधियों से बच सकते हैं। आपने उपस्थित समाजजनों कों व्यसन मुक्त रहने हेतु प्रेरणा प्रदान करते हुए जीवन में व्यसन न करने के संकल्प ग्रहण करवाए। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद एवं अणुव्रत विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अपने वक्तव्य में कहा कि तेरापंथ के प्रोफेशनल्स को एक मंच पर लाने का चिंतन जयपुर में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के विचार में आया। टीपीएफ उसी विचार की परिणीति है।

टीपीएफ आज तेरापंथ समाज का बहुत अच्छा प्रबुद्ध वर्ग का एक समूह बन गया है। सही मायने में व्यक्ति की जीवन शैली सही हो तो व्यक्ति बिमारियों से ग्रस्त नहीं होगा, अणुव्रत भी यही प्रेरणा देता है।

कार्यक्रम में प्रतीक श्रीवास्तव ने एम.ओ.सी. कैंसर एवं रिसर्च सेंटर इंदौर की कार्यशैली से सबको अवगत करवाया। डॉ. कृष्णा चौधरी ने कैंसर से संबंधित जानकारी प्रदान करते हुए भविष्य की सावधानियों के प्रति सबको मार्गदर्शन दिया। सुमित गौतम ने कार्डियक अटैक के समय त्वरित फिजिकल उपचार सी.पी.आर. के संदर्भ में प्रयोगों से अवगत करवाया।

इस मौके पर सभी अतिथियों का साहित्य एवं टीपीएफ कैलेंडर से सम्मान किया गया। टीपीएफ अध्यक्ष चन्द्र कुमार भटेरा एवं कार्यक्रम संयोजक सावन गादिया ने बताया लगभग 55 लोगों ने कैंप में जांच करवाई।

कार्यक्रम का सफल संचालन टीपीएफ के पूर्व अध्यक्ष सोहित कोटड़िया ने करते हुए मुनिश्री की आगामी विदेश यात्रा के संदर्भ में जानकारी दी। आभार टीपीएफ मंत्री मोहित कोटड़िया द्वारा व्यक्त किया गया।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा-2024 आयोजित

हनुमंतनगर

साध्वी सिद्धप्रभाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा भवन, हनुमंतनगर में हनुमंतनगर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों का सम्मान किया गया। शिशु संस्कार भाग 1 से भाग 5 की परीक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले तथा 90% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ज्ञानार्थियों को एवं ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव में भाग लेने वाले ज्ञानार्थियों को तेरापंथ सभा ट्रस्ट, हनुमंतनगर के पदाधिकारियों द्वारा सम्मानित किया गया। ज्ञानशाला संयोजिका मंजू दक ने सभी पधारे हुए ज्ञानार्थियों का स्वागत किया। साध्वीश्री ने ज्ञानार्थियों को बड़ों का आदर करने, देव-गुरु-धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा रखने तथा नियमित रूप से ज्ञानशाला आने की प्रेरणा दी। साध्वी आस्थाप्रभा जी एवं साध्वी दीक्षाप्रभा जी ने भी बच्चों को प्रेरणादायी संदेश दिया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष गौतम दक, उपाध्यक्ष प्रकाश बोल्या, सहमंत्री महावीर आर. देरासरिया, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएं एवं संपूर्ण श्रावक-श्राविका समाज की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

दिल्ली

ज्ञानशाला दिल्ली के 23वें वार्षिकोत्सव 'संस्कार बोध यात्रा' का आयोजन दो सत्रों में आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या साध्वी डॉ. कुंदनरेखा जी ठाणा-3 के सान्निध्य में अणुव्रत भवन में किया गया। साध्वीश्री के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। तत्पश्चात मंगलाचरण में प्रशिक्षिकाओं द्वारा अत्यंत सुंदर गीतिका का संगान किया गया।

विगत वर्ष का प्रतिवेदन साध्वीश्री को भेंट किया गया तथा प्रतिवेदन का वाचन दिल्ली ज्ञानशाला संयोजक महिम बोथरा द्वारा किया गया। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि अच्छे कार्यों के साथ आत्मिक गुणों का भी विकास करें। हमारा जीवन व्यावहारिक होना चाहिए। साध्वीश्री ने ज्ञानार्थियों को अच्छे बच्चे-सच्चे बच्चे बनकर व्यसन मुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। साध्वीश्री ने कहा कि यह प्रशिक्षिकाओं का सौभाग्य है कि वे ज्ञानशाला से जुड़कर तेरापंथ धर्म संघ में सेवा दे रही हैं। ज्ञानशाला संचालक संस्था जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दिल्ली के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने उपस्थित होकर सभी का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला प्रकोष्ठ केंद्रीय समिति सदस्या एवं ज्ञानशाला परामर्शक सरोज छाजेड़, दिल्ली ज्ञानशाला के परामर्शक रतनलाल जैन एवं मनफूल बोथरा ने वार्षिकोत्सव की शुभकामनाएं दीं। संयोजकीय टीम, ज्ञानशाला परिवार, दिल्ली सभा के अनेक पदाधिकारीगण, विभिन्न सभा संस्थाओं के पदाधिकारीगण, नोएडा से क्षेत्रीय संयोजिका कविता लोढ़ा, फरीदाबाद से क्षेत्रीय संयोजक राजेश जैन, ज्ञानशाला फरीदाबाद के संयोजक भरत बेगवानी एवं श्रावक समाज की गरिमामय उपस्थिति रही। वार्षिकोत्सव के प्रायोजक रेखा एवं अनिल बैद (राजलदेसर-दिल्ली) रहे। ज्ञानशाला दिल्ली के 12 केंद्रों के ज्ञानार्थियों ने योगा, सोशल मीडिया एवं एक्शन सॉन्ग की मनमोहक प्रस्तुति दी, जिसे उपस्थित परिषद ने खूब सराहा। Gyanshala Got Talent के अंतर्गत ऐतिहासिक कथाओं के नाटकीय रूपांतरण के तीन वीडियो दिखाए गए, जो ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा तैयार किए गए थे। इन प्रस्तुतियों ने सभी का मन मोह लिया। बच्चों की ड्रॉइंग प्रदर्शनी एवं सेल्फी पॉइंट आकर्षण का केंद्र बने रहे।

दूसरे सत्र में वर्षभर ज्ञानशाला को अपनी सेवाएं प्रदान करने हेतु ज्ञानशाला परिवार को सम्मानित किया गया। दिल्ली ज्ञानशाला संयोजक महिम बोथरा द्वारा सह-संयोजक के रूप में अशोक सेठिया की नियुक्ति की गई। प्रथम सत्र का कुशलतापूर्वक मंच संचालन ज्ञानार्थी लक्ष्य सेठिया और अर्हम बेताला ने किया, जबकि द्वितीय सत्र का मंच संचालन सह-संयोजिका श्वेता हीरावत द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन दिल्ली ज्ञानशाला सह-संयोजक मनीष पुगलिया ने किया।

उत्तर हावड़ा

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उत्तर हावड़ा के तत्वावधान में ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव एवं पिकनिक श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति में आयोजित किया गया। सलकिया ज्ञानशाला द्वारा नवकार महामंत्र की प्रस्तुति से वार्षिकोत्सव का शुभारंभ हुआ। उपासक रवि छाजेड़ ने ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को 10 मिनट प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। सभा अध्यक्ष जुगल किशोर बोथरा ने वार्षिकोत्सव में पधारे सभी गणमान्य महानुभावों एवं ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों का स्वागत किया। दक्षिण बंगाल आंचलिक सह संयोजिका निधि कोचर, हावड़ा की क्षेत्रीय संयोजिका सुझाता दुगड़, सह संयोजिका सरिता पटावरी, दक्षिण कोलकाता की क्षेत्रीय सह संयोजिका जयश्री सुराना, सरिता राखेचा, नीलिमा सिरोहिया, उत्तर हावड़ा सभा के निवर्तमान अध्यक्ष राकेश कुमार संचेती ने अपने वक्तव्य से बच्चों को प्रोत्साहित किया। उत्तर हावड़ा ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं द्वारा पधारे प्रतिनिधि मंडल का दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया। तत्पश्चात श्रीकुंज ज्ञानशाला ने 'अर्हम् अर्हम् की वंदना', आशुतोष ज्ञानशाला ने 'पर्यावरण', रंग भवन ज्ञानशाला ने कविता एवं सोहनदीप ज्ञानशाला ने सिद्धांत एवं आचरण विषय पर प्रस्तुति दी। तत्पश्चात् बच्चों को विभिन्न प्रकार के गेम खिलाएं गए, उसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में सभा के साथ महिला मंडल अध्यक्षा सुजाता दुगड़, मंत्री रेणु समदरिया एवं टीम, तेयुप अध्यक्ष विनीत कोठारी एवं टीम, 15 प्रशिक्षिकाएं और 48 बच्चे उपस्थित थे। उत्तर हावड़ा सभा के मंत्री प्रवीण कुमार सिंघी ने वार्षिकोत्सव समारोह का संचालन किया। मुख्य प्रशिक्षिका मीना भटेरा ने आभार ज्ञापन किया।

स्वभाव परिवर्तन की प्रक्रिया है ध्यान

टॉलीगंज।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में, प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशन और तेरापंथ सभा के तत्वावधान में, डायमंड सिटी साउथ में त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का शुभारंभ हुआ।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि मनुष्य का मन चंचल होता है और इसे स्थिर करने के अनेक उपायों में से एक है ध्यान। ध्यान स्वभाव परिवर्तन की प्रक्रिया है, जिससे शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। ध्यान से व्यक्ति ऊर्जा संपन्न होता है और यह भारतीय संस्कृति की आत्मा है। दुनिया में अनेक ध्यान साधना पद्धतियां हैं, जिनमें प्रेक्षाध्यान एक विशिष्ट विधा है। प्रेक्षाध्यान का अर्थ है गहराई से देखना—किसी एक वस्तु पर मन को केंद्रित करना, निर्विचारता और जागरूकता को विकसित करना। ध्यान ज्योति और प्रकाश स्वरूप है। मुनि श्री ने आगे कहा कि मनुष्य का अंतिम ध्येय आत्मा का साक्षात्कार करना है, और ध्यान इसी की प्रक्रिया है। कार्यशाला के दौरान मुनि श्री ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। प्रेक्षा प्रशिक्षिका मंजु सिपाणी, रश्मि सुराणा और अंजु कोठारी ने प्रशिक्षण और प्रयोग करवाए। सभा अध्यक्ष अशोक पारख ने स्वागत भाषण दिया। कार्यशाला में बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

धन से नहीं, धर्म से संपन्न होना है बड़ी बात

गंगाशहर।

मुनि सुमतिकुमार जी ने तेरापंथ भवन में संथारा साधिका पानी देवी मालू की गुणानुवाद सभा में कहा कि भगवान महावीर की वाणी है - आत्मा ही कर्ता है और आत्मा ही भोक्ता है। जन्म से मृत्यु के बीच का नाम है जीवन।

हम सबको यह विचार करना चाहिए कि हम अपनी आत्मा के लिए क्या कर रहे हैं ? यदि हमने अपनी आत्मा के लिए कुछ नहीं किया तो जीवन में पाप कर्मों का क्षय नहीं कर पाएंगे। हमें आत्मा को हल्का करने के लिए त्याग, तपस्या, ध्यान, स्वाध्याय करते रहना चाहिए। धन से संपन्न होना एक बात है पर धर्म से संपन्न होना बड़ी बात है। हमें सहनशीलता, धैर्य, समता भाव को बढ़ाना चाहिए।

मुनि श्रेयांस कुमारजी ने श्रावक के लिए संथारे का महत्व बताया। जैन लूणकरण छाजेड़ ने कहा कि जैन दर्शन में जन्म से लेकर मृत्यु तक सभी कार्य वैज्ञानिक ढंग से संपादित करने की विधि है।

मृत्यु को महोत्सव मनाने की कला केवल जैन दर्शन में ही है। तेरापंथी सभा के मंत्री जतन लाल संचेती ने संचालन करते हुए अपने विचार रखे।

CPS कार्यशाला का आयोजन

उधना। तेरापंथ युवक परिषद, उधना द्वारा कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग (CPS) कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में नेशनल ट्रेनर के रूप में सुनिधि मांडोत, चेतना मेहता एवं ललित हंसराज जैन ने उपस्थिति दर्ज करवाई और विद्यार्थियों को पब्लिक स्पीकिंग कौशल से जोड़ा। अध्यक्षता गौतम आंचलिया ने की। मुख्य अतिथि लक्ष्मीलाल बाफना (उपसभा राष्ट्रीय प्रभारी महासभा) ने उपस्थिति दी।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

राजलदेसर। 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी एवं डॉ. साध्वी परमप्रभा जी का आध्यात्मिक मिलन हुआ। साध्वी परमप्रभाजी, कांकरोली चातुर्मास संपन्न कर विहार करते हुए राजलदेसर पधारी। 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि साध्वी परमप्रभाजी, साध्वी कुशलप्रज्ञाजी की संसार पक्षीय भांजी हैं। उनसे मिलकर सभी को सात्विक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। वे सहज, सरल एवं साधनाशील साध्वी हैं—दुबली-पतली, परंतु कर्मठ। उनके सहवर्ती साध्वी वृंद भी अत्यंत सेवाभावी हैं। साध्वी परमप्रभा जी ने आह्लादित होते हुए कहा कि आज साध्वीश्री के दर्शन पाकर मैं निश्चिंत हो गई हूँ। उनके वात्सल्य से मेरी यात्रा की सारी थकान मिट गई। यहां रहकर मुझे साध्वीश्री के अनुभव से लाभान्वित होने का सुअवसर प्राप्त होगा।

साध्वी कुशलप्रज्ञा जी ने अपनी संसार पक्षीय भांजी का अभिनंदन करते हुए कहा कि आज मुझे विशेष प्रसन्नता हो रही है, क्योंकि यह उनका दीक्षित होने के बाद प्रथम मिलन का अवसर है। साध्वी वृंद ने पृथक-पृथक गीत का संगान किया। महिला मंडल ने स्वागत गीत का सामूहिक संगान किया, वहीं ज्ञानशाला के बच्चों ने उमंग एवं उत्साह के साथ अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ मंजू देवी एवं प्रेम देवी ने किया, तथा कुशल संचालन मोनिका बैद ने किया। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की सराहनीय उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
24 फरवरी - 02 मार्च, 2025

महाप्रज्ञ नाम से जुड़ा यह विद्यालय यूनिक बने

दक्षिण मुंबई।

'महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल' में 27 दिवसीय कार्यकारी प्रवास की सम्पन्नता पर तेरापंथ समाज द्वारा आयोजित मंगल भावना समारोह में उपस्थित परिषद को उद्बोधन प्रदान करते हुए प्रो. साध्वी मंगलप्रज्ञाजी के कहा- हम सबका प्रबल सौभाग्य है कि हमें तेरापंथ जैसा यशस्वी, वर्चस्वी और तेजस्वी संघ प्राप्त हुआ। आचार्यों की सुदृढ़ परम्परा ने इस संघ रूपी वटवृक्ष को सींचा, संवारा।

आज यह संघ गुरुनिष्ठ, आज्ञानिष्ठ, मर्यादा और अनुशासन से प्रख्यात बना हुआ है। साध्वीश्री ने कहा इस भवन में चातुर्मास काल में मुनि कुलदीप कुमार जी एवं उनके सहयोगी मुनि मुकुल कुमार जी ने अध्यात्म की धारा बहाई, अथक श्रम से सफलतम चातुर्मास सम्पन्न किया। हमारा 27 दिवसीय प्रवास आनंदकारी रहा। साध्वीश्री जी ने कहा भारत का यह एक मात्र स्कूल है, जहां चारित्रात्माओं का प्रवास होता रहता है। यह स्कूल भी "महाप्रज्ञ' अभिधान से जुड़ा है, इसका गौरव और बढ़ना चाहिए। सबका ऐसा प्रयास हो कि यह विद्यालय उदाहरण बने।

मंगल भावना समारोह में उपस्थित परिषद को साध्वी श्री ने कहा- सभी संस्थाएं अपने दायित्व के प्रति सजग हैं। हमारे प्रवास का श्रावक समाज ने लाभ उठाया है। सभी की संघ-संघपति के प्रति श्रद्धा-भावना बढ़ती रहे, अध्यात्मिक विकास होता रहे, यही हमारी मंगलकामना है। महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउण्डेशन की ओर से अध्यक्ष कुन्दनमल धाकड़, गणपत डागलिया, पूर्व अध्यक्ष किशनलाल डागलिया, तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश डागलिया, तेयुप अध्यक्ष गिरीश सिसोदिया, तेममं अध्यक्षा वनीता धाकड़ ने साध्वीश्री के प्रति मंगलभावना प्रेषित की। महिला मंडल सदस्याओं ने समूह संगान किया।

साध्वी सुदर्शनप्रभाजी, साध्वी अतुलयशाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी एवं साध्वी शौर्यप्रभाजी ने अपने भावों को सामूहिक संगान से अभिव्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथ सभा मंत्री दिनेश धाकड़ ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

विद्यार्थियों में हो...

लायंस क्लब एक व्यापक संस्था है और तेरापंथी महासभा तेरापंथ समाज की प्रतिनिधि सभा के रूप में कार्य कर रही है। महासभा ने शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कार्य अपने हाथ में लिया है, जो तेरापंथ समाज में अभूतपूर्व योजना के रूप में देखा जा सकता है। पिछले कुछ वर्षों में महासभा निरंतर उत्थान कर रही है, उड़ान भर रही है। जीवन विज्ञान, शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों का भी विषय है। शिक्षा के साथ संयम के संस्कार भी विद्यार्थियों में विकसित किए जाने चाहिए। महासभा को इस पर विशेष ध्यान देकर कार्य करना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, नशामुक्ति, सेवा-भावना, सौहार्द और मैत्री की भावना विकसित होनी चाहिए। लौकिक ज्ञान के साथ आत्मा में संस्कारों का भी समावेश हो। संस्कारयुक्त शिक्षा का महत्व सर्वोपरि होता है। यदि शिक्षा और संस्कार दोनों साथ चलते हैं, तो विद्यार्थियों के उत्तम व्यक्तित्व का निर्माण संभव है।

पूज्य प्रवर ने आगे फरमाया - आज के दिन मुख्यमुनि महावीरकुमारजी की दीक्षा हुई थी। धर्मसंघ में श्रेष्ठ श्रुताराधक की उपाधि इन्हें प्राप्त हुई है और इन्होंने पीएचडी कर 'डॉक्टर' की उपाधि भी अर्जित की है। फाल्गुन कृष्ण पंचमी के इस दिन इन्हें दीक्षा लिए 23 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। इसी दिन साध्वीवर्याजी संबुद्धयशाजी की समणी दीक्षा भी संपन्न हुई थी। दोनों की दीक्षा आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के सान्निध्य में संपन्न हुई थी। मुख्यमुनि धर्मसंघ में ज्ञान, साधना और संस्कारों का प्रसार करते रहें। उनका स्वास्थ्य उत्तम बना रहे, जिससे वे अपने कार्यों को और अधिक प्रभावी बना सकें। साध्वीवर्याजी का भी ज्ञान-विकास सतत होता रहे, वे भी समाज और धर्मसंघ की सेवा में संलग्न रहें। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी साध्वी समाज में सर्वोच्च स्थान पर हैं और उनके नेतृत्व में साध्वी समाज एवं महिला समाज में श्रेष्ठ कार्य होते रहें।

परस्पर सहयोग से कार्य सुगमता से संपन्न होते हैं। 'परस्परोपग्रह जीवानाम्'—अर्थात, सभी प्राणियों का जीवन परस्पर सहयोग पर आधारित है। जब दो व्यक्ति या संस्थाएँ मिलकर कार्य करती हैं, तो उसमें अधिक ऊर्जा और गति आती है। आध्यात्मिक और धार्मिक सेवा निरंतर होती रहनी चाहिए। तेरापंथी महासभा और लायंस क्लब के संयुक्त तत्वावधान में यह विद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र ही नहीं, बल्कि संयम, सच्चाई, सेवा और सौहार्द के संस्कारों का केंद्र भी बने। यह विद्यालय आध्यात्मिक उन्नयन का माध्यम बने, ज्ञान-विकास के लिए एक महत्वपूर्ण निमित्त बने—यही मंगलकामना है। कार्यक्रम के प्रारंभ में महासभा के सदस्यों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मर्यादा महोत्सव प्रवास व्यवस्था समिति भुज के अध्यक्ष कीर्ति भाई संघवी, दीपक पारख, लायंस चैरिटेबल ट्रस्ट के चेयरमैन संजय देसाई, राजेश मनोत एवं महासभा के प्रधान न्यासी महेंद्र नाहटा ने 'आचार्य महाश्रमण इंटरनेशनल स्कूल' के संदर्भ में अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं।

संयम और त्याग में...

धर्म का संचय करें और धर्म का टिफिन भरने का प्रयास करें, ताकि वह अगले जन्म में भी हमारे काम आ सके। यह नहीं पता कि भविष्य में क्या होने वाला है, इसलिए हमें अपनी आध्यात्मिक तैयारी बनाए रखनी चाहिए। यदि हम प्रतिदिन धर्म की कमाई करते रहें, तो आध्यात्मिक संचय अवश्य होगा। हमें आत्मा को अपना सच्चा मित्र बनाने का प्रयास करना चाहिए। मंगल प्रवचन के उपरान्त पूज्यवर ने द्वारा नवदीक्षित मुनि कैवल्यकुमारजी को पाँच महाव्रतों तथा छठे रात्रि भोजन विरमण व्रत का विस्तृत बोध देते हुए उन्हें छेदोपस्थापनीय चारित्र प्रदान किया। इस अवसर पर कच्छ विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर मोहनभाई पटेल ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त कीं। पूज्यवर ने उन्हें आशीर्वचन देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के माध्यम से विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान, बल्कि उत्तम संस्कार भी प्राप्त होने चाहिए। पुलिस इंस्पेक्टर हार्दिक त्रिवेदी ने भी अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त कीं। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बोलती किताब

6 बातें ज्ञान की

पहली बात यह है कि धर्मगुरु श्रद्धाशील होना चाहिए - उसे शास्त्रों, आगमों और संस्था के प्रति गहरी श्रद्धा रखनी चाहिए। नियमों और मर्यादाओं का सम्मान करे, क्योंकि बिना संविधान के संगठन खतरे में पड़ सकता है। मुखिया को संगठन के हित को प्राथमिकता देनी चाहिए, न कि अपने स्वार्थ को। साथ ही, उसमें आत्मविश्वास और अर्हत भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा होनी चाहिए। धर्म, गुरु या आत्मकल्याण के प्रति बार-बार संशय करने वाला व्यक्ति मुखिया बनने के योग्य नहीं होता। सच्ची श्रद्धा और विश्वास ही नेतृत्व की पहली आवश्यक अर्हता है।

दूसरी बात यह है कि व्यक्ति सत्यवादी हो - मुखिया वही बने जो सच्चा और यथार्थवादी हो। जो झूठ बोले, उसके प्रति न श्रद्धा होती है, न विश्वास। सत्य के रास्ते में कठिनाइयाँ आ सकती हैं, पर सच्चाई न छोड़ें। यदि सच कहना संभव न हो, तो चुप रहना बेहतर है, पर झूठ न बोलें।

चौथी बात यह है कि धर्मगुरु बहुश्रुत होना चाहिए - उसके पास विभिन्न विषयों और शास्त्रों का ज्ञान हो, अपने संप्रदाय के साथ अन्य संप्रदायों की बातें भी जानता हो। बिना ज्ञान के वह शिष्यों को क्या सिखाएगा? बहुश्रुत धर्मगुरु न केवल ज्ञान से, बल्कि अपने जीवन के गुणों से भी प्रेरणा देता है। इसलिए धर्मगुरु को बहुश्रुत और विद्वान होना आवश्यक है।

तीसरी बात यह है कि व्यक्ति मेधावी हो - मेधावी के दो अर्थ हैं - पहला, धर्मगुरु मर्यादावान हो, अपनी सीमाओं में रहे और विधि-विधानों का पालन करे। अगर वह मर्यादा का पालन नहीं करेगा, तो अनुयायी क्यों मानेंगे? दूसरा, वह बुद्धिमान हो, जिसमें प्रबुद्धता, तार्किकता और ज्ञान ग्रहण करने की क्षमता हो। बिना बुद्धि के न स्वयं का विकास होगा, न संप्रदाय का। इसलिए धर्मगुरु को बुद्धि-संपन्न होना आवश्यक है।

पांचवीं बात यह है कि धर्मगुरु शक्तिमान होना चाहिए - वह शारीरिक रूप से स्वस्थ और सक्षम हो, इंद्रियां ठीक से काम करें, और वह श्रम कर सके। उसे मंत्रों और उनके प्रयोग का ज्ञान होना चाहिए। साथ ही, मजबूत मनोबल हो, ताकि विरोध और कठिनाइयों के सामने न टूटे, बल्कि उन्हें पार कर सके।

छठी बात यह है कि धर्मगुरु को अल्पाधिकरण यानी कलहशील नहीं होना चाहिए - उसे शांतचित्त रहना चाहिए, बात-बात पर गुस्सा या झगड़ा नहीं करना चाहिए। अगर कोई क्रोधित हो जाए, तो धर्मगुरु को शांत रहना चाहिए, वरना असम्मान पैदा हो सकता है। उसे सागर की तरह गंभीर और उदार होना चाहिए, न कि पुरानी बातें उखाड़कर बदले की भावना रखने वाला। शांत स्वभाव और उदार दृष्टि ही सच्चे धर्मगुरु की पहचान है।

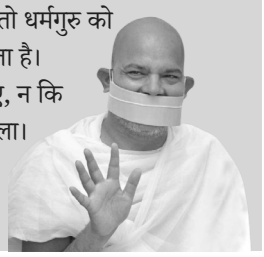

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

संवाद जैन तेरापंथ न्यूज से

मर्यादा महोत्सव के पश्चात पूज्य प्रवर द्वारा घोषित चातुर्मास

मुनि सुधाकरकुमारजी	:	जगराओ, पंजाब
साध्वी रतिप्रभाजी	:	जसोल
साध्वी सोमयशाजी	:	यशवंतपुर, बैंगलोर
साध्वी चरितार्थप्रभाजी	:	लुधियाना, पंजाब
साध्वी प्रांजलप्रभाजी	:	संगरूर, पंजाब
साध्वी कनकरेखाजी	:	धुरी, पंजाब
साध्वी कनकश्रीजी 'राजगढ़'	:	सुनाम, पंजाब
साध्वी हेमलताजी	:	भुज
साध्वी मंगलयशाजी	:	गांधीधाम
मुनि कुलदीपकुमारजी	:	कांदिवली, मुंबई
साध्वी तिलकश्रीजी	:	भिवानी
मुनि अनंतकुमारजी	:	ठाणे, मुंबई
मुनि विनोदकुमारजी	:	पीलीबंगा
मुनि रविन्द्रकुमार जी	:	रावलिया कलां, सेरा प्रांत
साध्वी प्रज्ञाश्रीजी	:	बोरज, मेवाड़

संकलन : अभातेयुप जैन तेरापंथ न्यूज

श्रामण्य का प्राप्त होना है विशेष उपलब्धि : आचार्यश्री महाश्रमण

भुज।
11 फरवरी, 2025

तेरापंथ धर्म संघ के नायक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने कच्छी पूज समवसरण में उपस्थित श्रद्धालुओं को अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि साधु जीवन प्राप्त होना एक बड़ी उपलब्धि होती है। संसार में असंख्य लोग हैं जो साधु नहीं बन पाते और गार्हस्थ्य जीवन में ही रहते हैं। कई मनुष्यों में त्याग और संयम की चेतना विशेष रूप से जागृत होती है, जिससे वे साधु बनने का प्रयास करते हैं और कई इसमें सफल भी हो जाते हैं।

साधु दीक्षा बचपन में भी प्राप्त हो सकती है, और यौवन या वार्धक्य में भी। कुछ लोग बचपन में ही साधु बनकर अंतिम समय तक साधुत्व की आराधना करते हैं, जो अत्यंत श्रेष्ठ और महान कार्य है। साधु बनने के मार्ग में कई कठिनाइयाँ आती हैं, लेकिन उन बाधाओं को पार कर साधु बन जाना एक अत्यंत ऊँचा और प्रशंसनीय कार्य है।

आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने भी बचपन में ही दीक्षा ग्रहण की थी। उनका संयम पर्याय अत्यंत दीर्घकालिक और महत्वपूर्ण रहा। आचार्य पद का अपना महत्व है, लेकिन साधुत्व ही मूल तत्व है। यदि साधुता है, तो मुक्ति निश्चित है।

संयम का संरक्षण बना रहना चाहिए। संयम में रमण करने वाला व्यक्ति ही आगे बढ़ सकता है। श्रामण्य को त्यागने वाला व्यक्ति बाद में पश्चाताप करता है और सांसारिक मोह में फँसकर कठिनाइयों का सामना करता है।

आज माघ शुक्ला चतुर्दशी है, जो हमारे यहाँ हाजरी का दिन माना जाता है। हाजरी में प्रायः साधु-साध्वियां होते हैं, इस बार समणियाँ और मुमुक्षु बाइयाँ भी उपस्थित हैं। इस बार इनका लंबा प्रवास हो रहा है, जिससे उन्हें गुरुकुल में उपासना का अवसर प्राप्त हुआ है। समणियों और साधु जीवन में कुछ अंतर अवश्य है, परंतु दोनों ही संन्यास मार्ग के अंग हैं। समणियां भी धर्मसंघ की अच्छी सेवा करती हैं। कुछ लाडनूं समणीकेन्द्र में रहती हैं तो कई भारत-नेपाल आदि क्षेत्रों में रहती हैं तो कितनी समणियां विदेशों की यात्रा करती हैं और धर्म प्रचार आदि का कार्य करती हैं। समणियों को जितना संभव हो सके, गुरुकुलवास में रहने और प्रशिक्षण आदि का लाभ प्राप्त होता रहे। मुमुक्षुओं को यदि गुरुकुलवास में कभी लम्बे समय तक रहने आदि की सुविधा हो जाए तो उन्हें बहुत कुछ जानने, समझने, साध्वियों की निकट सेवा आदि के माध्यम से अच्छी जानकारी हो सकती है, अच्छा अवसर प्राप्त हो सकता है। वर्ष 2026-27 योगक्षेम वर्ष होगा, जिसमें समणियों और मुमुक्षुओं के प्रशिक्षण और सेवा के विषय में विशेष चिंतन किया जाएगा। उन्हें गुरुकुलवास में सेवा और प्रशिक्षण का अवसर मिल सके, इसके लिए जो भी संभव होगा, वह किया जाएगा।

पूज्यवर ने हाजरी का वाचन का क्रम संपादित करवाते हुए प्रेरणाएँ प्रदान करते हुए फरमाया कि मर्यादाओं के प्रति हमारी जागरूकता बनी रहे और सबमें सौहार्द का भाव बना रहे। हमें पूर्वाचार्यों के साहित्य का ज्ञान प्राप्त होता रहे, विशेष रूप से अतीत के चार आचार्यों का साहित्य अधिक उपलब्ध है। स्वाध्याय और ध्यान का क्रम निरंतर चलता रहे। पूज्यवर ने उपस्थित चारित्रात्माओं एवं श्रद्धालुओं को थोड़ी देर तक प्रेक्षाध्यान का प्रयोग भी कराया। आचार्यश्री की अनुज्ञा से साध्वी देवार्यप्रभाजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया। आचार्यश्री ने साध्वीजी को तीन कल्याणक बक्सीस किए। तदुपरान्त उपस्थित चारित्रात्माओं ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया।

समणी विपुलप्रज्ञाजी ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

भावों की अशुद्धि या विशुद्धि के पीछे होती है कार्मण शरीर की भूमिका : आचार्यश्री महाश्रमण

भुज।
12 फरवरी, 2025

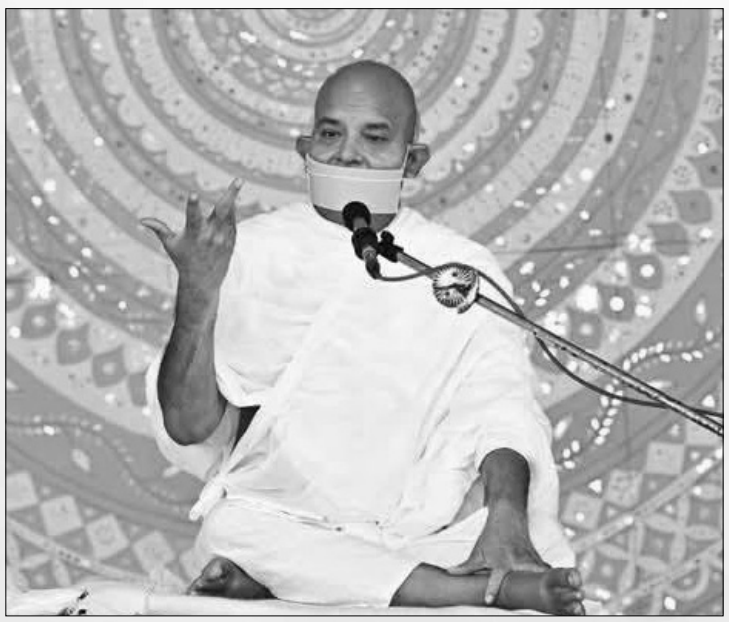

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि पुरुष अनेक चित्तों वाला होता है। प्रत्येक प्राणी के भीतर कार्मण शरीर होता है। जैन तत्व विद्या में पाँच प्रकार के शरीर बताए गए हैं। हमारा शरीर औदारिक होता है, जो मनुष्यों और तिर्यंचों का होता है। इस औदारिक शरीर के अस्तित्व में रहते हुए साधना के माध्यम से मनुष्य इसी जन्म में मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

वैक्रिय शरीर सामान्यतः देवों और नारकीय जीवों का होता है, किंतु विशेष परिस्थितियों में यह तिर्यंचों और मनुष्यों में भी कुछ समय के लिए प्रकट हो सकता है। आहारक शरीर केवल मनुष्यों में पाया जाता है, और वह भी केवल विशिष्ट ज्ञान-लब्धि प्राप्त साधुओं में। ऐसे साधु किसी विशेष प्रयोजन से आहारक शरीर का पुतला निकालते हैं। यह पुतला केवलज्ञानियों के पास जाकर प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करता है और कुछ समय बाद विलीन हो जाता है।

औदारिक, वैक्रिय और आहारक शरीर स्थूल श्रेणी के शरीर माने जाते हैं। शेष दो शरीर—तैजस और कार्मण—हर सांसारिक प्राणी में होते हैं। तैजस शरीर सूक्ष्म कोटि का होता है, जबकि कार्मण शरीर सूक्ष्मतर होता है। हमारे भावों की जड़ में यही कार्मण शरीर होता है, और जब तक इस पर हमारा नियंत्रण नहीं होता, यह हमारे जीवन की दिशा तय करता है। इसे ही हमारे समस्त कार्यों का संचालक या गाड़ी का ड्राइवर कहा जा सकता है।

एक गति से दूसरे गति में ले जाने वाला और भेजने वाला कार्मण शरीर ही होता है। भावों की अशुद्धि या विशुद्धि के पीछे कार्मण शरीर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यही कारण है कि पुरुष अनेक चित्तों वाला होता है—कभी उसमें अच्छे भाव उत्पन्न होते हैं, तो कभी बुरे। ये भाव चित्रपट के समान होते हैं, जो निरंतर बदलते रहते हैं। कार्मण शरीर में मोहनीय कर्म का विशेष प्रभाव रहता है, जो व्यक्ति के विचारों और कर्मों को प्रभावित करता है। इसलिए हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हमारे भीतर दुर्भावनाएँ न आएँ और सद्भावना बढ़े।

हमारी साधना आत्मा की शुद्धि के लिए है, जिससे कर्मों की निर्जरा भी होती है। हमारी परंपरा में तीन प्रकार की सामायिक मान्य हैं—छः कोटि की, आठ कोटि की एवं नौ कोटि की। श्रावक इन तीनों कोटियों की सामायिक कर सकता है। सामायिक के दौरान श्रावक के सावद्य कार्य भी अप्रत्यक्ष रूप से चलते रहते हैं, जैसे—खाने की व्यवस्था, व्यापार या ब्याज की आय आदि। किंतु साधु के लिए नौ कोटि का संपूर्ण त्याग अनिवार्य होता है।

सामायिक संवर रूप है, किंतु यदि उसमें जप, स्वाध्याय या ध्यान चलता रहे, तो यह शुभ योग बन जाता है। इससे कर्मों की निर्जरा होती है और पुण्य का बंध भी होता है। सामायिक में पाप का बंध भी संभव है, क्योंकि श्रावक में अभी भी कषाय, प्रमाद और अव्रत आश्रव चालू रहता है। यहाँ तक कि साधुओं के लिए भी पाप कर्म का बंध निरंतर होता रहता है, विशेष रूप से छठे और सातवें गुणस्थान तक के साधुओं में। जन्म और मरण का कारण कार्मण शरीर है, इसलिए इसे 'कारण शरीर' भी कहा जाता है। यदि हम संवर और निर्जरा की साधना करें, तो हमारे भाव शुद्ध होंगे, और एक समय ऐसा आएगा जब आत्मा पूर्णतया कर्ममुक्त होकर विशुद्ध हो जाएगी।

सातवां बोल-शरीर पांच

औदारिक शरीर
वैक्रिय शरीर
आहारक शरीर
तैजस शरीर
कार्मण शरीर

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
24 फरवरी - 02 मार्च, 2025

चिंतामणि रत्न के समान मनुष्य जीवन का ना करें दुरुपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

वीतरागता के साधक ने भुज वासियों को मोक्ष की दिशा में अग्रसर होने की दी प्रेरणा

भुज।
16 फरवरी, 2025

> मनुष्य जीवन में उत्कृष्ट धर्म-साधना की जा सकती है, इसलिए इसे व्यर्थ भोग-विलास में न गंवाएँ। मनुष्य जीवन सोने के थाल के समान बहुमूल्य है—इसका उपयोग भोजन के लिए करें, न कि कचरा उठाने के लिए। अमृत को प्राप्त कर उससे पैर न धोएँ, और गजराज को पाकर उस पर लकड़ियों का भार न ढोएँ। मनुष्य जीवन चिंतामणि रत्न के समान बहुमूल्य है, और साधु जीवन भी उसी प्रकार अनमोल है। जो व्यक्ति इस जीवन का दुरुपयोग करता है, वह मूढ़ कहलाता है। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी धर्म, त्याग और तप की साधना संभव है। यदि हम ऐसा करें, तो मोक्ष की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं।

भुज शहर के 17 दिवसीय प्रवास का अंतिम दिवस। तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि मनुष्य जीवन अत्यंत महत्वपूर्ण है, इस जीवन में जो धर्म की आराधना की जा सकती है और जो आत्मिक विकास संभव है, वह किसी अन्य योनि में नहीं हो सकता। केवलज्ञान की प्राप्ति भी केवल मनुष्य जीवन में ही संभव है।

शास्त्रों में बताया गया है कि यह जीवन हमें क्यों जीना चाहिए, इसे किस उद्देश्य से सार्थक बनाना चाहिए और हमारा लक्ष्य क्या होना चाहिए। गृहस्थों के अपने-अपने सांसारिक लक्ष्य हो सकते हैं, जो आजीविका के लिए आवश्यक हैं, किंतु इनसे भी उच्चतम लक्ष्य पूर्व कर्मों का क्षय कर मोक्ष प्राप्त करना है। इसके लिए संयम और तप की साधना आवश्यक है। साथ ही, शरीर को स्वस्थ रखना भी उतना ही जरूरी है, जिसके लिए उचित भोजन आवश्यक है।

विषय-भोगों से बचकर साधना में प्रवृत्त होना चाहिए। साधुओं को माधुकरी प्रवृत्ति से जीवन यापन करना चाहिए ताकि अतिरिक्त हिंसा न हो। मुंह से स्वाद भी लिया जा सकता है और वाद-विवाद भी किया जा सकता है, किंतु दुर्भावना से प्रेरित विवाद उचित नहीं है। ज्ञान बढ़ाने के लिए वाद-विवाद किया जाए, परंतु व्यर्थ की बहस से बचा जाए। साधक को न तो स्वाद के प्रति आसक्ति होनी चाहिए और न ही अनावश्यक वाद-विवाद में संलग्न होना चाहिए। यदि कहीं कोई अच्छी बात सुनने को मिले, तो मन से उसकी अनुमोदना की जा सकती है।

यदि जीवन का लक्ष्य ऊर्ध्वगमन है, तो बाह्य विषयों और आकर्षणों में उलझने की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकतानुसार उनका उपयोग किया जा सकता है, किंतु उनमें आसक्ति नहीं होनी चाहिए। मनुष्य जीवन में उत्कृष्ट धर्म-साधना की जा सकती है, इसलिए इसे व्यर्थ भोग-विलास में न गंवाएँ। मनुष्य जीवन सोने के थाल के समान बहुमूल्य है—इसका उपयोग भोजन के लिए करें, न कि कचरा उठाने के लिए। अमृत को प्राप्त कर उससे पैर न धोएँ, और गजराज को पाकर उस पर लकड़ियों का भार न ढोएँ। मनुष्य जीवन चिंतामणि रत्न के समान बहुमूल्य है, और साधु जीवन भी उसी प्रकार अनमोल है। जो व्यक्ति इस जीवन का दुरुपयोग करता है, वह मूढ़ कहलाता है। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी धर्म, त्याग और तप की साधना संभव है। यदि हम ऐसा करें, तो मोक्ष की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं।

भुज प्रवास के संदर्भ में पूज्य प्रवर ने कहा कि मर्यादा महोत्सव एवं दीक्षा समारोह से युक्त यह प्रवास हुआ। इतना श्रावक समाज का श्रम, समय के रूप में योगदान रहा। इतने साधु–साध्वियों, समणियों–मुमुक्षु बहनों का समागमन हुआ। सभा आदि अन्य संस्थाएं भी हैं सभी अच्छा कार्य करते रहे। भुज में खूब धार्मिक चेतना बनी रहे।

पूज्यवर के भुज प्रवास की सम्पन्नता पर मंगल भावना कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनि अनंतकुमारजी ने अपनी भावना व्यक्त की। मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कीर्तिभाई संघवी ने टीम सहित गुरुदेव के प्रति मंगल भावना व्यक्त की। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष वाड़ी भाई, स्वागताध्यक्ष नरेंद्र भाई, चंदुभाई संघवी, शांतिलाल बागरेचा, अरविंद भाई डोशी, महेश गांधी, तेरापंथ महिला मंडल से अमिता मेहता, लोहाणा समाज से डॉ. मुकेश, बेटी तेरापंथ की ओर से प्रतिभा जैन, भुज सात संघ के अध्यक्ष स्मित भाई झवेरी, जिला शिक्षण अधिकारी भूपेंद्र सिंह बाघेला आदि ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त कीं। कार्यक्रम में ज्ञानशाला, कन्या मंडल एवं तेरापंथ महिला मंडल की विशेष प्रस्तुति भी हुई। सूरत से समागत गिरीश भाई वकील ने 'आगम बुक' श्रीचरणों में निवेदित की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

दीक्षा दिवस पर मुख्य मुनि को मिला आशीर्वाद

भुज प्रवास की झलकियां निहारते पूज्य प्रवर

श्रीचरणों में कच्छ-भुज के पुलिस अधीक्षक विकास सुंडा

तेरापंथ भवन, भुज में पूज्य प्रवर का पदार्पण

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।